सचित्र करामात

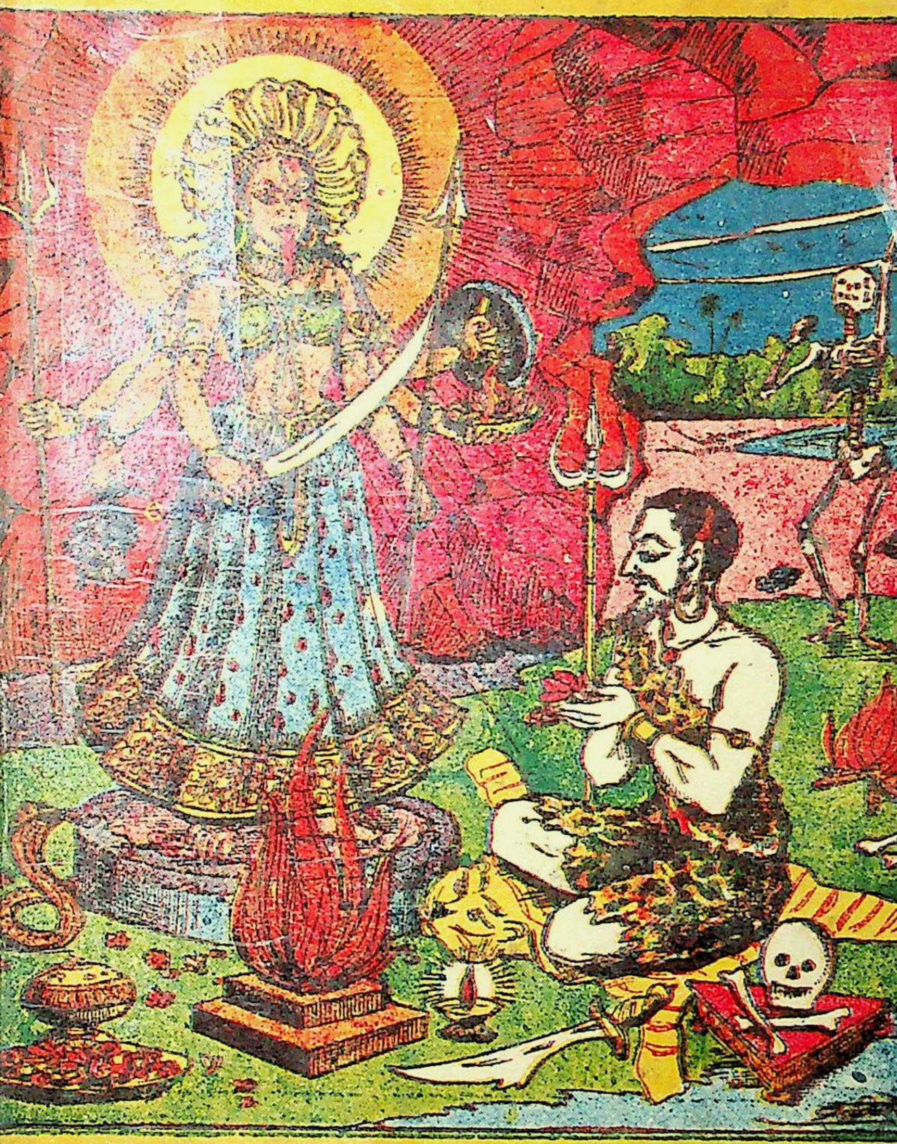

असली

सचित्र करामात

एस० के० ट्रेडर्स
82/6 पलटन बाजार, देहरादून

लेखक—
मुखिया बसन्त लाल

प्रकाशक—
पंकज प्रकाशन, सतघड़ा, मथुरा
फोन–४०११३०

सन् १९९६ मूल्य ५१)

अद्भुत जादू का चमत्कार

* पहला पाठ *

जिस साधन को मैस्मेरेजम कहा जाता है, उस को संस्कृत साहित्य में त्राटक योग के नाम से पुकारा है। मैस्मेरेजम या त्राटक के साधन कितनी शक्ति रखते हैं। उसका परिचय नीचे की सच्ची घटनायें देंगी।

महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथजी कविराज एम. ए० "कल्याण" में प्रकाशित कराते हैं कि--स्वामी विशुद्धानन्द के त्राटक योग की प्रशंसा सुनकर मैं उन के दर्शन करने के लिये गया। शाम का समय था। मैंने जाकर देखा कि बहुत से भक्तों से घिरे हुये योग-राज विशुद्धानन्द जी विराजमान हैं। सुन्दर और लम्बी दाढ़ी चमचमाते विशाल नेत्र, पकी हुई उमर, सफेद जनेऊ, शरीर पर लाल वस्त्र, चरणों पर भक्तों के चढ़ाये हुए फूल और मालाओं के ढेर। उस समय योगीराज दर्शकों से कह रहे थे कि--शास्त्र की सभी बातें सत्य हैं। आवश्यकता पड़ने पर मैं उनको दिखा भी सकता हूं। जगत में सर्वत्र ही सत्तामात्र रूपमें, सूक्ष्म भाव में, सभी पदार्थ, सर्वदा तथा सर्वथा

विद्यमान रहते हैं। परन्तु जिसकी मात्रा अधिक विकसित हो जाती है, वही प्रगट होकर दिखलाई देने लगता है। शेष सब तत्व, मौजूद रहने परभी दिखाई नहीं देते। यदि उन तत्वों को, नाटक योग द्वारा यानी मैस्मेरेजम के जरिया अगर खींचा जाय तो वे खिंच आते हैं। बस नाटक का मूल अभिप्राय यही है संसार में हम जिस चीजको जैसा देखते रहे है, वास्तव में वह तो उसकी व्यवहारिक अवस्था है उसकी सूक्ष्म शक्ति यानी उसकी रूह दूसरी चीज है। लोहे का टुकड़ा केवल लोहा ही है--यह बात नहीं। उस लोहे के टुकड़े में, सारी प्रकृति गुप्त रूपसे भरी है। परन्तु लोहा प्रधानता होने से बाकी के सब तत्व छिप गये हैं। इसलिये साबित हुआ कि लोहे में सोना भी है। अब अगर किसी तरह उस लोह का अव्यक्त सोना खींचा जा सके तो वह लोहे की कील सोने की कील बन सकती है। उस समय आप उसको सोने की कील कहने लगेंगे, हालांकि वह पहिले सोने की ही कील थी। वास्तव में, लोहा ही सोना नहीं बन गया। उस कील का तत्व गुप्त कर दिया गया और सोना वाला तत्व बाहर खींच कर प्रकट कर दिया गया।

इसके बाद योगीराज ने गुलाब का फूल उठाया और मुझसे कहा-'बोलो इस फूलको किस रंगका बना दूं। मैंने कहा इसे जवाकुसुम का फूल बना दीजिये।

योगीराज ने उस फूल को अपने बाए हाथ में लिया और दाहिने हाथ से उस पर एक स्फटिक शीशा के द्वारा सूर्य किरण माला एकत्र करने लगे हमने देखा कि उस गुलाब के फूल में उलट फेर होना शुरू हुआ पहिले एक लाल आभा प्रकट हुई फिर धीरे-धीरे तमाम गुलाब का फूल गायब हो गया। इसके बाद उसकी जगह पर एक ताजा जवाकुसुम का फूल आ गया। मैंने उस फूलको अपने हाथमें लेकर देखा था।

स्वामी जी बोले-"इसी प्रकार समाव जगत, प्रकृति का खेल हो रहा है। जो उसके तत्वों को समझते नहीं है परन्तु उन पर मोहित होकर अपनी आत्मा को भूल जाते हैं। त्राटक योग के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है उस द्वारा तत्वों से काम लेना विज्ञान कहलाता है।"

हमने पूछा-"तब तो योगी के लिये सभी कुछ सम्भव है।"

स्वामी जी ने कहा-'निश्चय ही योगियों को

शक्तियों की कोई तादाद या सीमा नहीं । क्या हो सकता है क्या नहीं हो सकता, इसकी कोई सीमा नहीं है । परमात्मा भी एक आदर्श योगी ही है । सिवा उनके महादेवी पिता परमेश्वरी का पूरा पता किसी को भी नहीं है जो निर्मल होकर, परमात्मा के साथ जितनी देर ठहर सकते हैं, जब पवित्रता, सम्पर्क कार से सिद्ध होजाती है तब परमात्मा की सायुज्यता प्राप्त होती है । तब उस योगी की शक्ति का कोई ठिकाना नहीं रहता श्रीराम और श्रीकृष्ण जी सायुज्यता शक्ति का ही प्रदर्शन किया था । सायुज्यता की महान शक्ति, सबसे स्वरक्षित है । परन्तु परमात्मा जैसी, सब प्रकार की पवित्रता प्राप्त करना कोई आसान बात नहीं है । योगी के लिये असम्भव भी सम्भव है । उस योगी की इच्छा को माया स्वयंम पूरी कर देती है । और उस माया द्वारा सब कुछ किया जा सकता है ।

हम—इस फूल का परिवर्तन अपने योग बल से किया या अन्य किसी उपाय से किया है ।

स्वामी-उपाय मात्र योग है । दो चीजों का योग कहते हैं । इस फूल का परिवर्तन सूर्य विज्ञान द्वा

किया गया है । इच्छा शक्ति से भी स्वजप आदि कार्य किये जा सकते हैं और विज्ञान से भी । हमने इच्छा शक्ति से काम न लेकर विज्ञान से काम किया है ।

हम–सूर्य विज्ञान क्या है ।

स्वामी–सूर्य ही जगत का प्रकाशक है । जो योगी सूर्य की किरनमाला या वर्णमाला को पहिचान गया और वर्णको शुरू करना जान गया, एवम् किरनमाला को परस्पर मिश्रित करना सीख गया, वह सहज ही सभी पदार्थों का मूल बीज है इस किरनमाला के विभिन्न वर्णों के संयोग भेद से, विभिन्न पद उत्पन्न होते हैं । वैसे ही किरणभेद और भिन्न किरण मिलन से जगत के नाना प्रकार के पदार्थ उत्पन्न होते हैं । अवश्य ही यह स्थूल दृष्टि में, बीज जगत का रहस्य है । फलतः सूर्य की किरनमाला को पहचानना और उससे काम लेना ही सूर्य विज्ञान है । यही सूर्य के प्रति नाटक योग है । जो योगी सेवा कर सकता हैं । वे सभी स्थूल और सूक्ष्म काम करने में समर्थ होते है सुख, दुख, पाप, पुण्य, काम क्रोध, लोभ, प्रीति भक्ति आदि सभी संस्कार भी किरणों के द्वारा पैदा होते हैं । स्थूल वस्तु के लिये तो कहना ही क्या है । जो

सूर्य त्राटक योग को जानते हैं वह सभी कुछ कर सकते हैं निर्माण भी – संहार भी परिवर्तन तो कोई बात ही नहीं है। बस यही सूर्य विज्ञान है ।

हम – आपको यह सूर्य त्राटक योग या सूर्य विज्ञान कहाँ से मिला । हमने तो इसका नाम भी नहीं सुना ।

स्वामी –तुम लोग ज्ञान के सामने निरे बच्चे हो सूर्य विज्ञान, भारत की ही चीज है। उच्च कोटि के योगी लोग इसको जानते थे ; और जानते हैं वर्तमान समय में जो सूर्य विज्ञान मौजूद हैं, वे हिमालय और तिब्बत की गुफाओं में गुप्त रूपसे रहते हैं ।

***

मैस्मेरेजम सीखने वाले के नियम

* दूसरा पाठ *

१. सर्वदा प्रसन्न रहो । क्रोध करने से भी शक्ति नष्ट होगी ।

२. सर्वदा साफ रहो । शरीर से और मन से भी साफ रहो ।

३–नशा नहीं करना चाहिए।

४–धीरज और शान्ति का अभ्यास रखो।

५–भोजन ताजा और सादा खाना चाहिए।

६–गरम पानी में स्नान करना चाहिये।

७–रात को सोते समय वीर पुरुषों की याद करते हुये सो जाना चाहिये। मतलब यह कि सोते समय विचार पवित्र रखना चाहिए। व्यभिचार या भोग सम्बन्धी विचार करने से स्वप्नदोष का डर रहता है।

८–सोते समय कमरे की खिड़की खुली रक्खो। तथा मुँह बन्द करके साँस लेना चाहिये।

९–तेज कदम वाली चाल मत चलो।

१०–माँस नहीं खाना चाहिए।

११–मैस्मेरेजम द्वारा कोई गलत काम करने का विचार मत करो।

१२–ब्रह्मचर्य का पालन तन मन और वचन से करो।

१३–जिसे बेहोश करो उसे कोई ऐसी आज्ञा मत दो, जिसके कारण वह भयभीत हो जावे।

१४–साधक की आयु २० साल से कम नहीं होनी चाहिए ।

१५–चिन्ता और भय के समय प्रयोग मत करो ।

१६–प्रयोग बच्चे पर करना चाहिए । प्रयोग के लिए लड़के से लड़की अच्छी रहती है । लड़की का स्वभाव शान्त होता है ।

१७–प्रयोग करने वाले बालक की आत्मिक शक्ति अगर आपसे अधिक हुई तो आप खुद बेहोश होने लगोगे ऐसी अवस्था में दूसरा बच्चा बदलो ।

१८–एकान्त और शान्त स्थान में प्रयोग करो ।

१९–समय शान्त हो । प्रातःकाल सबसे श्रेष्ठ है ।

२०–विशेष यानी जिसपर प्रयोग करो योग्य हो ।

२१–प्रतिदिन एक ही बार प्रयोग करो ।

२२–एक ही समय पर प्रयोग करो । समय बदलने से हानि होती है ।

२३–प्रयोग का स्वच्छ हो, वहाँ हरियाली यानी फूल आदि हों तो और भी अच्छा है ।

२४–जिस बालक पर प्रयोग किया जाय उसकी उमर १२ वर्ष की होनी चाहिए । लड़की पर शीघ्र सफलता मिलती है ।

* तीसरा पाठ *

पूर्ण बिन्दु अभ्यास

एक ६ इन्च लम्बा ६ इन्च चौड़ा पट्ठा लो उस पर एक तरफ श्वेत कागज चिपका दो। अगर पट्ठा एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा हो तो भी हर्ज नहीं है। पट्ठे के बीचों बीच एक इन्च चौड़ा गोला प्रकार से बनाओ और उसे खूब काली स्याही से भर कर घोर काला करलो दीवाल से एक हाथ फासले पर बैठो और जिस जगह नजर आसानी से पड़े उसी जगह पर दीवाल में कीलों से जड़ दो। पद्मासन लगाकर बैठना चाहिये। एकटक निगाह से उस काले बिन्दु को देखना चाहिये। जब आँखों में पानी भर तब नजर हटा लो। पानी पोंछ डालो। फिर वही अभ्यास करो पहिले दिन २-३ बार ऐसा करो। कुछ दिनों बाद तुम्हारी नजर २०-२५ मिनट तक बिना पलक झपकाये एक टक देखने में समर्थ हो जायगी। बस उस समय तुम पहिले प्रयोग में पासहो जाओगे। इसके बाद उस पट्ठे को एक फीट दाहिने तरफ खिसकाकर लगा दो दृष्टि जमाओ। जब दाहिने बांये

और सामने तीनों कोणपर दृष्टि जम जावे तब समझ लो कि पहिला प्रयोग पूरी तौर पर सफल हो गया। दृष्टि जमाने पर जब कागज का वह काला घेरा लोप हो जावे तो समझो पहला पाठ पूरा हो गया।

--*--

शीशा पर अभ्यास

* चौथा पाठ *

एक शीशा लेकर एक फीट की दूरी पर दीवाल में लगावो पद्मासनसे ठीक सामने बैठ जाओ। अपनी दाहिनी आँख की पुतली पर नजर जमाओ। इस अभ्यास से तुमको कई एक आश्चर्य दिखलाई देंगे। कभी सामने अन्धेरा हो जायेगा और कभी शीशे का रंग बदल जायेगा कुछ दिन बाद जैसे कागज वाला काला छिप जाता था, उसी तरह आँखों की काली पुतली भी छिप जायेगी और सारा शीशा भी छिप जाया करेगा।

कुछ समय तक तुम्हारी नजर में अंधकार रहेगा फिर उसी अंधकार में तुम्हें एक छोटी सी रोशनी दिखलाई पड़ेगी कि जो तुम्हारी ही नेत्र शक्ति है।

बस तुम्हारा दूसरा अभ्यास भी पूर्ण हो गया। उस समय से तुम्हारी नेत्र शक्ति बढ़ती जायगी। ऊपर के दोनों अभ्यास काला बिन्दु पर और शीशे पर एक-एक महीने तक करना चाहिये।

--:※:--

※ पाँचवा पाठ ※

चन्द्रमा पर अभ्यास

रात के दस बजे से बारह बजे के मध्य में यह अभ्यास करना चाहिये। छत पर बैठकर इस अभ्यास को करो। वहीं पद्मासन लगाकर चन्द्र पर नजर जमाओ। उस समय यह विचार करते रहो कि चन्द्रमा में अनन्त शक्ति भरी है और मैं उसकी कुछ शक्ति खींच रहा हूँ। कुछ दिनों बाद चन्द्रमा भी तुम्हारी नजर से गायब हो जायगा। फिर भी नजर जमाये रहो। धीरे धीरे तुमको चन्द्रमा में नदी, पहाड़ और जंगल दिखलाई पड़ेंगे। क्योंकि चन्द्रमा भी पृथ्वी की तरह एक लोक है और उसमें भी आबादी है। बस चन्द्रमा का अभ्यास समाप्त हुआ।

--

छठा पाठ

फूल का अभ्यास

किसी बाग में जाओ और एकान्त स्थान वाले एक फूल के पौधे के पास एक फीट की दूरी पर बैठ जाओ और पद्मासन लगाकर बैठना चाहिये । उस पौधे के एक फूल पर अपनी दृष्टि स्थिर करो और विचार करो कि यह फूल अभी सूख जायगा । अपनी इच्छा शक्ति को बढ़ावा देते हुए कहो कि वह फूल अभी मुरझा जायेगा । और इसे अवश्य मुरझा जाना चाहिये । जब वह फूल मुरझा जाय तो समझो सफलता प्राप्त हो गई । इसके बाद इच्छा करो कि यह मुरझाया हुआ फूल फिर वैसा ही खिल जावे कि जैसा पहिले खिला हुआ था । ए ! फूल तुझे जरूर खिलना पड़ेगा और मेरी इच्छाशक्ति तुझे अभी हरा भरा कर सकती है । दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा वह फूल मुरझा जायगा और फिर हरा भरा हो जायगा । जब मारण और संजीवनी दोनों प्रयोग सिद्ध हो जावें तब समझो कि फूलवाला प्रयोग पास हो गया ।

सातवाँ पाठ

बच्चों पर अभ्यास

किसी खुले हुए स्थान पर ११-१२ साल के लड़के या लड़की को ले जाओ। उसको सामने खड़ा करो और कहो कि हम तुम को बिना नींद के सुला देंगे और फिर तुम्हारे मन को देश विशेष की सैर करायेंगे इसके बाद उसे एक हाथ के फासले पर बैठा दो और खुद भी बैठ जाओ। अब बच्चे से कहो— "मेरी नजर से नजर मिलाओ। मेरी नजर से नींद निकलेगी वह तुमको सुला देगी। यह शब्द कहते हुए साधक के दिल में निश्चय होना चाहिये कि ऐसा जरूर होगा यानी बच्चा सो जायगा। उस बच्चे के प्रति अपने मन में प्रेम रखना चाहिये। वह बालक चंचल चित्त, अविश्वासी और बदचलन न होना चाहिये कि जिस पर मैस्मेरेजम का अभ्यास करना चाहते हो। बालक से कहो कि वह गौर से हमारी दाहिनी आंख का तिल देखे।" जब बालक देखने लगे तो अपने दोनों हाथों को ऊपर से नीचे पास करो। पांच मिनट के भीतर ही वह बालक सो जायेगा।

जब होश में लाना हो तो नीचे से हाथों को ऊपर की तरफ पास करो और यह कहोकि जाग जाओ तुमको तुरन्त होश में आना चाहिये। जब बालक बेहोश होने लगे तो उसे आराम से लिटा देना चाहिये। उसका सिर उत्तर की तरफ रखना चाहिये बेहोश बालक आपके प्रत्येक सवाल का ठीक जवाब देगा क्योंकि उसका मन व्यापक हो गया है।

गायत्री पर मैस्मेरेजम

आठवाँ भाग

"जगत में जो कुछ जड़ और चेतन दिखलाई पड़ता है। वह सब गायत्री का ही स्वरूप है। शब्द भी गायत्री ई। गायत्री के द्वारा संसार के असंभव काम सम्भव हो जाते है और भयानक से भयानक दुःख का निवारण होता है" यह बात उपनिषद्‌ कहते हैं।

"गायत्री की शक्ति ही संसार के लिए सर्वशक्ति हैं।

—मनु महाराज

गायत्री पर त्राटक यानी मैस्मेरेजम करने वाले

ही प्रधान योगी हैं और वह जनता की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं ।

—स्वामी विवेकानन्द

"उपजहि जासु अंश गुणखानी ।
'अगिनत उमां रमाँ ब्रह्माणी ।।"

—तुलसी

उस शक्ति का नाम गायत्री ही है कि जहां से बचाने वाली रक्षा करने वाली और मरने वाली प्रकृतियाँ जन्म लेती हैं । यह बात रामायणमें लिखी हैं ।

"जगत, शब्द ओ३म् में है और उसी का मन्त्र—गायत्री में है ।

गायन्तम् त्रायते यस्माद्‌ गायत्री परि कीर्तिता—

—व्यास

गायत्री पर मैस्मरेजम का तरीका—

प्रात: चार बजे उठकर, फारग होकर, स्नान करो । किसी पवित्र स्थान पर बैठ कर जाप्य करो । प्रति मंत्रपर आहुति देना चाहिए । रोजाना ११ माला जपना चाहिए । ३११ लाख मन्त्र, एकाग्रचित्त से जपने पर सिद्ध हो जाएगा । पवित्र रहे, ब्रह्मचर्य रहे एक बार भोजन करे, पृथ्वी पर शयन करे । गायत्री

मन्त्र सभी जानते हैं। इस सिद्धि से प्रत्येक प्रश्न का ठीक उत्तर प्राप्त होता है। साधक रोग और शोक से बच सकता है। लक्ष्मी का आगमन होता है। शत्रु डरते हैं।

९वां पाठ

मैस्मेरेजम का असली हाल

मैस्मरेजम योग का एक अंग है जिसको इच्छा शक्ति भी कहते हैं। इसका निर्भर मानसिक शक्तिपर है। जो सबके भीतर विद्यमान है। यह मन की-एकाग्रता पर निर्भर है। मनुष्य के शरीर में तीन नाड़ियां इड़ापिंगला--सुखमना के नाम से प्रसिद्ध हैं। जो रीढ़ की अस्थि मेरु बन्डि से सम्बन्ध रखती है। ईड़ा शरीर के दाहिने अंग में है। इसकी शक्ति सूर्य से आती है। इसमें प्रकाश रहता है, प्रभाव गरम है, पिंगला बाम ओर है। उसका स्वामी चन्द्रमा है। इसमें विकर्षण शक्ति रहती है, प्रभाव शीतल है। सुखमना में खालिस नूर भरा है। योगी इसीके द्वारा ईश्वर दर्शन किया करते हैं। और समाधी के समय इसी मार्ग से प्राण ब्रह्मांड में पहुंचाते हैं। यह योग

का अंग है । परन्तु स्वसमा नामी एक मनुष्य चीन में हुआ है । उसने इसका नाम मैस्मरेजम रक्खा है । बाद में फ्रांस में उसने बहुत से रोग इसी विद्या से अच्छे किये तो फ्रान्सियों ने इस विद्या को सीखा और मैस्मरेजिम बाब की एक कमेटी कायम की ।

दसवाँ पाठ

दृष्टि पर मैस्मेरेजम

सांप अपने शिकार को एकाग्र होकर देखता है और इच्छा करता है कि वह शिकार मेरे पास खिच आवे । निश्चय और एकाग्रता की महिमा देखिये कि बड़े-बड़े जानवर अपने आप आकर अजगर के मुँह में प्रवेश कर जाते हैं । इसी नियम पर विद्वानों ने यह कायदा निकाला कि यदि कोई मनुष्य आपखंड शक्ति प्राप्त करले तोवह जिसे चाहे अपने पास खिच सकता है । वह फिर चाहे जितनी दूर हो और चाहे जितना कठोर हृदय हो । आकर्षण शक्ति का यह मैस्मरेजम बड़े काम की चीज है । दृष्टि पर साधन करने वाला यदि इच्छा करेगा कि कोई सो जावे तो वह सो जायेगा और अगर किसी रोगी को निरोग करना

चाहो तो दृष्टि से निरोग कर सकते हो। यदि कोई वस्तु चाहोगे तो वह भी मिल जायगी। लोग अपने मन का भेद भी, साधन की इच्छा शक्ति से बतला देंगे।

—※—

ग्याहरवाँ पाठ

नाक पर मैस्मरेजम

पद्मासन लगाकर बैठो। उत्तर की तरफ मुख करो अपनी नाक की नोंक पर नजर जमाओ। कुछ देर बाद आँखों से पानी निकलेगा। उसे पोंछ कर फिर नजर जमाओ इस प्रकार करते-२ जब एक घंटा नजर जमने लगेगी तब नाक से सुगन्धि निकलने लगती है। तभी सिद्ध समझो। इस साधन से अपनी मृत्यु भी जानी जाती है। मौत के ३ दिन पूर्व से अपनी नाक दिखाई नहीं देती। यदि इस साधन को तीन साल तक लगातार जारी किया जावे, तो छाया पुरुष सिद्ध हो जायगा। छाया पुरुष की शक्ति महान है। वह सब सम्भव असम्भव काम कर सकता है।

※—※

बारहवां पाठ

चाँद पर मेस्मरेजम

यदि किसी को पित्त का रोग हो यानी गरमी बढ़ने लगी हो कि जैसे तपेदिक कहते हों तो उसे चाँद पर मेस्मरेजम करना चाहिये। चाँद की तरफ मुख करके पद्मासनसे बैठना चाहिये और चांदको अपलक देखना चाहिये। आंसू भर आने पर नजर नीची करो आँसू पोंछ कर फिर देखने लगो और यह निश्चय करो कि हमारे शरीर की गरमी को चन्द्रमा की शीतलता नष्ट कर रही है। जब रोग दूर हो जाय, तब फिर इस साधन को नहीं करना चाहिये।

तेरहवां पाठ

पास देना क्या चीज है?

रोते हुए बच्चे को माता थपकी देकर सुला देती है इसका मतलब यह है कि हाथों में बिजली होती है बस यही पास करने का लक्ष है। पास दो प्रकार का होता है —

१—बिजली भरने वाला पास।

२—बिजली निकालने वाला पास।

अपने दोनों हाथों की उंगलियों को कुछ झुकाकर सिर से पैर की तरफ हाथों को लेजाना-बिजली भरने वाला पास कहलाताहै। उस समय जिस इच्छा का निश्चय करो कि अमुक काम होगा और अवश्य होगा। माता जब रोते हुये बच्चे पर थपकी वाला पास देती है, तब वह मनमें यह निश्चय भी करती जाती है कि बच्चा रोना छोड़ दे और चुपचाप होकर सो जावे और वह सोजाता है पास करते समय हाथों से शरीर को छुआ जाय या न छुआ जाय, इसमें कोई विशेष बात नहीं। जब आदमी प्रेम से अपनी स्त्री का हाथ पकड़ता है या उसके गालों पर हाथ फेरता है तब वह स्त्री रोमाँचपूर्ण हो जाती हूँ वहाँ पर बिजली का संचालन प्रेम ने किया था इसीलिये प्रेममयी बिजली काम कर गई। माता ने अपने हाथों की बिजली का संचालन नींद के लिये किया था, इसी कारण बच्चा सो गया। मान लो कि किसी आदमी के सिर में भयानक पीड़ा होरही है। उसे बैठा लो। अपने दोनों हाथ उसके मस्तक पर धीरे-धीरे या जोर २ से पास करो और यह निश्चय करो कि हमारे हाथ की बिजली, पीड़ा का कचूर निकाल रही है ५

मिनट में सिर का दर्द जाता रहैगा।

अगर पैर की नाक से सिर की ओर हाथ चलाते हुए पास किया जायगा तो उसकी बिजली निकल जायगी। सोते हुए को जगानेके लिये यही पास काम में लाया जाता है।

चौदहवां पाठ

अनजान पर मैस्मरेजम

मान लो आपको किसी ऐसी स्त्री या पुरुष पर मैस्मरेजम करना है कि जो बहुत दूर है और जिसे आपने देखाभी नहीं। चित्र देखा हो तो ठीक नहीं तो कल्पना का सहारा बहुत है। मान लो आप अपनी कोई बात हिटलर या रामचन्द्र या अकबर साहबान से कहना चाहते हो तो रात में दस बजे किसी एकान्त स्थान में बैठो और चाहे जिस जीवित या मृतक का नाम लेकर यह सोचो कि वह तुम्हारे एक हाथ के फासले पर बैठा है। उसको जो कहना हो वह कहिये इस अभ्यास से वह व्यक्ति स्वप्न द्वारा आपके विचार को ग्रहण करेगा।

—

पन्द्रहवां पाठ

अपने ऊपर मैस्मेरेजम

एक कदे आदम आईना के सामने पद्मासन से बैठ जाओ। अपनी छाया को शीशा में देखो और यह निश्चय करो कि यह शीशे वाला व्यक्ति सोजावे। थोड़ी देर बाद नींद आवेगी और तुम सो जाओगे। इस साधन द्वारा समाधी लगाना आता है। सोते समय अगर यह इच्छा की जाय कि हम सो जावें और इन्द्रलोक या सूर्यलोक सपने में देखें तो वह भी सो जायगा। यदि राम, कृष्ण, विष्णु, ईसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, राधास्वामी, मृत्यु, आदत, शैतान और शेष आदि के किसी लोक का हाल जानना हो तो उसी लोक की याद में सो जाओ। इसके बाद ईश्वर के दरबारकी याद करके सोना। बस यही समाधिहै।

सोलहवां पाठ

प्राण पर मैस्मरेजम

सुबह शाम एकान्त में पद्मासन लगाकर बैठो। पालती मारकर बैठने को पद्मासन कहते हैं। इसके बाद नेत्र बन्द कर जोर जोर से सांस खींचो और उसे

नाभि में ठहरा दो नाभि ही शरीर का केन्द्र स्थान यानी जंकशन है। नाभि में हवा को रोककर १-२-३-४ की गिनती पढ़ो। जब सांस न रुके, बाहर निकाल दो और गिनती बन्द कर दो। फिर वही चेष्टा करो। प्रति अभ्यास में ३ मरतबा यह क्रिया करनी चाहिये। जब १०० तक सांस ठहरने लगे, तब सिद्ध समझो। इस साधन से यह लाभ होता है कि चंचल मन एकाग्र हो जाता है। मैस्मरेजम में दो बातें प्रधान हैं–(१) एकाग्रता और (२) निश्चय, एकाग्रता प्राप्त करने के लिये, प्राण पर मैस्मरेजम करना चाहिये।

सत्रहवाँ पाठ

निश्चय पर मैस्मरेजम

चूंकि हम ईश्वरके पुत्र हैं इसलिये हमारी प्रत्येक शुभाशा माया देवी को पूरी करनी चाहिये। क्योंकि वह हमारी माता है। माता का धर्म है कि वह पुत्र की प्रत्येक शुभ इच्छा पूरी करे। बुरे कामों पर निश्चय मत करो, उनको माता पूरा करने के लिये बाध्य नहीं है, याद रक्खो कि निश्चय की तीव्रता, तकदीर से भी लड़ जाती है, और बिगड़ी तकदीर को भी सुधार

लेने की शक्ति होती है। भगत प्रहलादने इस निश्चय पर मेस्मरेजम किया था—

जाको राखै साइयाँ—मार सकै न कोय।

अठारहवाँ पाठ

इच्छा शक्ति कैसे बढ़ती है

रात में भोजन करने के एक घन्टा बाद, पाल्ती मारकर बैठ जाओ। नेत्र बन्द करो। नाभि में राम की मूर्ति की स्थापना कल्पना से करो या आपका जो भी इष्ट हो उसकी तस्वीर नाभि में स्थिर करो और कम से कम एक हजार बार उसका नाम जपो यह क्रिया रोजाना और हमेशा करो।

इससे दो लाभ होंगे—

१—मैस्मरेजम की प्रत्येक क्रिया शीघ्र पास करोगे।

२—मन में शैतान अपने बुरे विचारों को इकट्ठा न कर सकेगा।

अंग्रेजी और मुसलमान जिस शक्ति को शैतान कहते हैं उसे हिन्दू और योगी लोग महाकाल कहते हैं। आठ गुण होते हैं और आठ अवगुण होते हैं। गुण—१ सत्य, २—दया, ३—क्षमा, ४—ज्ञान, ५—प्रेम,

६--धीरज, ७--शान्ति, ८--ज्ञान ये आठ गुण हैं। अवगुण--१ काम, २ क्रोध, ३ लोभ, ४ मोह, ५ मद, ६ ईर्ष्या, ७ निद्रा, पाखन्ड ये आठ अवगुण हैं। इनसे बचाने वाला यही साधन है।

उन्नीसवाँ पाठ

सूरज पर मैस्मरेजम

प्रातः जब सूरज निकले, तब एक फूल की थाली लो और उसे जल से भर दो। उस थाली को ऐसी जगह पर रख दो कि जहाँ सूरज की छाया यानी प्रतिबिम्ब बीच थाली में पड़े।

जब थाली के पानी का हिलना बन्द हो जावे, तब पास बैठकर सूरज की छाया देखो। साथ ही मन में कहो--निश्चय के साथ कहो--

१--सूरज भगवान सब जगह के स्वामी हैं।

२--सूरज भगवान को सब मालूम रहता है।

३--सूरज भगवान मेरे सवाल का ठीक जवाब दे सकते हैं। उस स्थान पर आग के द्वारा धूप की खुशबू फैलानी चाहिये।

ब्रह्मचर्य रखकर और स्नान करके अभ्यास करना

चाहिये । जिस समय तुम अपलक एक घन्टा सूरज की छाया देखने लगोगे, यानी १ महीने अभ्यास करने के बाद तुमको ये लाभ देगा ।

१—जो सवाल करोगे उसका जवाब पाओगे ।

२—नेत्र शक्ति बहुत बढ़ जायगी ।

३—प्राण शक्ति बहुत बढ़ जायगी ।

ब्रह्मचर्य और पाँच तत्वों के स्वामी सूरज भगवान को पानी के सहारे से ही देखना चाहिये । अगर कोई साधक बाबा बटुकदास की तरह सूर्य पर मैस्मरेजम करेगा तो वह सूरदास बन जायगा । झांसी की धर्मशाला में हम ठहरे हुए थे । १९२० ई० की बात है । सुबह देखा कि साधु, सूरज भगवान को आकाश में एक टक देख रहा है । लगभग एक घन्टा तक उस ने सूर्य का गलत अभ्यास किया जब वह साधन से अलग हुआ तब हमने उस साधक को अपने पास बुलाया और कहा—'आपका साधन गलत है । सूरज का मैस्मरेजम जल के द्वारा होना चाहिए, ताकि सूरज की गरमी को जल खाता रहे ।

बटुकदास बोले—जैसा मेरे गुरु ने उपदेश दिया है, वैसा करता हूँ ।'

हमने कहा--आपके गुरु इस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं हैं। दुबारा जब वह साधु प्रयाग में मिला तब तक वह सूरदास बन चुका था।

बीसवां पाठ

गो मूत्र पर मैस्मरेजम

प्रातः किसी नई और निरोग गाय का पेशाब एक मिट्टी के नये बर्तन में ले लो। फिर एक मिट्टी के कुकड़े में १।२ छटांक पेशाब डालकर निश्चय करो-

१--'गाय का दूध १०० गुण रखता है और गाय का पेशाब १००० गुण रखता है।'

२--'यह इतना पवित्र माना गया है कि चरणामृत में पड़ता है।'

३--'इसके पीने से शरीर के सब रोग भाग जाते हैं। ४० दिन तक पीने से हरेक रोग दूर होता है।

अगर रोजाना पीया जाय बुढ़ापा का रोग दूर हो जाता है। आयु बढ़ जाती है।

इसमें एक प्रकार का नशा यानी सरूर होता है, उसके कारण दिन भर तबियत आनन्द में रहती है।

१।२ छटांक से पीना शुरू करो। एक सप्ताह

बाद एक छटाँक पीने लगो। फिर मात्रा बढ़ाओ।

मूत्र लेते ही हाँडी को बन्द करदो। क्योंकि उस में स्प्रिट होती है, वही काम करती है।

गोमूत्र की भाप न उड़ने पावे यानी जल्दी व्यवहार की जाय। छानने की इच्छा हो तो छान भी सकते हो। नहीं तो कोई जरूरत नहीं।

इस समय में चित्रकूट में एक बाबा जी से मुलाकात हुई थी। सन् १९३१ ई० की बात है। उनका नाम था जमुनादासजी। एक काली गाय साथ रखते थे जिसका नाम कामधेनु था। प्रातः जब वह पेशाब करती, बाबाजी दोनों हाथों की हथेली मिलाकर पीने बैठ जाते जिस प्रकार पानी पिलाने वाला गङ्गासागर की टोंटी से जल गिराता है। और मुसाफिर दोनों हाथोंकी अंजली बाँधकर पानी पीता है। वह रोजाना एक सेर नम्बरी पीने लगे थे। धीरे-धीरे १ सेर तक १२ साल के अभ्यास में पहुंचे थे। उसके प्रभाव से वह भूख प्यास और नींद पर विजय पा चुके थे। कायाकल्प की चीज-मामूली चीज नहीं।

—

इक्कीसवाँ पाठ

आक दूध पर मैस्मरेजम

सुबह एक मिट्टी का बर्तन लो और उसमें एक छटाँक पानी डालो। मुँह धोकर यानी फरागत होकर यह काम करो। कलेवा करने के पहले इस अमूल्य साधन को करो।

उस पानी लेजाकर एक आक वृक्ष के पास रक्खो। खुद भी बैठ जाओ। अपनी नजर आग की जड़ पर जमाओ और निश्चय पूर्वक तीन सतबल कहो—

१—"हे आकके दूध। आपके अमृत समान हो। इसलियेशंकर भगवान के प्रधान पेय हो। आपना साधन करने वाला निरोगी रहता है, बुढ़ापे की बीमारी से दूर रहता है और दीर्घ जीवन प्राप्त करता हैं। आपका दूध शरीर से समस्त जहरीले कीड़ों को मारता है, आप विष रूपी अर्मत हैं।

इसके बाद उस आक से कहो —

"हे अर्मत वक्ष। आप कृपाकर अपनी दो बूदें अपने इस नालायक सेवक को प्रदान कर लायक बनावें।

तब एक पत्ता तोड़ो। ऊपरी भाग में कोई एक

पत्ता तोड़ो। उसमें जो दूध निकले उसमें से दो बूंद अपने पानी में डालो और पी जाओ। एक सप्ताह बाद ३ बूंद करना फिर ४ बूंद। इसी तरह से बढ़ा सकते हो और जिस मिकदार पर चाहो रुक भी सकते हो।

आक के दूध का एक साधक हमें नर्मदा जी के किनारे मिला था। वह १ पाव दूध रोज पीने लगे थे। १० साल से साधन करते थे। भूख-प्यास और नींद पर विजय प्राप्त कर चुके थे। नाम था बाबा अमरदास जी, कहते थे कि जब मैं १-२ सेर दूध पीने लगूंगा तब आकाश गामी हो जाऊंगा।

बुढ़ापा वाले महारोग को दूर भगाकर, नवयोवन स्थिर करने वाला यह महादुग्ध भाग्यवान ही सेवन करते हैं।

खून, मांस और हड्डी तक के खराब कीड़ों को मारता है।

आक के प्रति जो प्रार्थना की जाती है वह मैस्मेरेजम कराना कहलाता है। उस क्रिया के बिना जो दूध ग्रहण किया जायेगा वह गुणकारी नहीं होगा। निश्चयतात्म की प्रार्थना भी मैस्मेरेजम है।

बाईसवाँ पाठ

मृतक पर मैस्मेरेजम

साधू समाज में एक मत का नाम 'औघड़ मत' है। उसका पहला नियम है:- 'नर-मांस पर मैस्मेरेजम करो।'

जो लोग मांस भक्षण करना बुरा नहीं मानते, उनको यह साधन करना चाहिये। जो लोग गोश्त-खोरी से घृणा करते हैं उनको यह साधन कदापि न करना चाहिये। घृणा पूर्वक किया गया मैस्मेरेजम उल्टा फल दिखलाता है।

मांस-भक्षी लोग तीन प्रकार के होते हैं:-

१- केवल बकरे का गोश्त खाने वाले।

२- नरमांस छोड़कर और गोमांस छोड़कर सब गोश्त खाने वाले।

३- नरमांस तथा गोमांस तक मांसाहारी, औघड़ मत वाले केवल नरमांस खाते हैं।

नर मांस पर मैस्मेरेजम करने की क्रिया इस प्रकार है :-

जब कोई मरा हुआ मनुष्य या लड़का व लड़की

मर जावे और उसको जल-प्रवाह कर दिया जावे तब उस मुरदे को औघड़ मत वाले साधक पानी से बाहर निकालते हैं और आग पर धूप डालकर खुशबू पैदा करते हैं, इसके बाद मुरदे की छाती पर बैठकर उसके ललाट को एकटक देखते हुए यों कहते हैं :-

'हे देव ! आप मर कर अमर हुए हैं और मांस निकालकर कच्चा या भुना हुआ खा जाते हैं। नये साधक भूनकर व पुराने साधक कच्चा खाते हैं क्योंकि हर कच्ची चीज भुनी से अधिक गुणकारी होती है। नरमाँस किसी रोगी जीव का न होना चाहिये।

किसी किसी टापू में जब आदमी मरता है तो लोग-बाजे बजाते हैं और बड़े उल्लास के साथ उसका माँस पकाकर खाते हैं। इस कामसे रोग और बुढ़ापा दूर होता है तथा दीर्घजीवन प्राप्त होता है। सिवाय औघड़ मत वालों के और किसी को मृतक पर मैस्मेरेजम नहीं करना चाहिये।

तेईसवाँ पाठ

गोरखमुंडी पर मैस्मेरेजम

गोरखमुंडी कि जिसको गुडमुंडी भी कहते हैं,

गुरु गोरखनाथ जी की बतलाई हुई चीज है। इस दिव्य जड़ी पर मैस्मेरेजम करने वाला कभी बूढ़ा नहीं होता। यह आजमाई हुई बात है। यह जड़ी तीन प्रकार की होती है– (१) श्वेत फूल वाली (२) लाल फूल वाली (३) काले फूल वाली।

पूर्णमासी के दिन सूर्योदय के पहिले जहाँ पर यह जड़ी हो वहाँ पर जाकर उसे मैस्मेरेजम करनी चाहिये। सब जगह कँकरीली जगह पर ही गुलमुंडी होती है।

गुण–रोगों को दूर भगाती है, बुढ़ापे के आगमन को रोकती है। जिस उमर से सेवन की जाये वही उमर स्थिर रहती है। खून साफ करती है और नया खून पैदा करती है। बसी हुई पुरानी गरमी को दूर करती है। हैजा, ताउन, मलेरिया, ज्वर, युद्ध ज्वर और इकतरा तिजारी को दूर करती है।

पूर्णमासी को प्रातः सूर्य उदय होने के पूर्व बूटी के पास बैठकर, हाथों से पास करते जाओ। यानी जड़ की तरफ से हाथ चलाओ। यह निश्चय करो कि इस बूटी की नींद दूर हो और जागृत बनकर गुणकारी बने। पांच बार पास करो और यह कहो–

हे दिव्य बूटी ! गुरु गोरखनाथ की प्राणप्यारी जड़ी ! आप अपने सेवन करने वाले की आयु स्थिर करें और बुढ़ापे को रोकें । आप में यही गुण है और आप इस गुण को अवश्य प्रगट करें ।

किसी प्रकार की गुलमुंडी हो, सबका गुण एक ही है । गुलमुंडी पर मैस्मेरेजम करके उसे जड़ सहित खुरपी से खोद लाओ । उसे छाया में सुखाओ और पचाँग सहित कूट-छानकर रक्खो । प्रातः एक तोला सफूफ खाकर पानी या दूध पीना चाहिये । यह काम हमेशा यानी रोजाना करते रहो ।

जिनको गुलमुंडी न मिले वह हमसे मंगा सकते हैं ।

इस बूटी के सफूफ में काली मिर्च तथा शक्कर मिलाना चाहो तो मिला सकते हो ।

इसी प्रकार का मैस्मेरेजम ब्राह्मी बूटी और रुद्रवन्ती बूटी पर भी किया जाता है । ब्राह्मी हरिद्वार में और रुद्रवन्ती काशी के राजघाट पर मिलती है । ब्राह्मी से बुद्धी बढ़ती है और रुद्रवन्ती से कायाकल्प होताहै । ब्राह्मी, रुद्रवन्ती और गुलमुंडी को मैस्मेरेजम के बाद सेवन करो या कराओ ।

बाजीगर

(१) आग से न जलेगा

फिटकरी, अफीम, नमक सांभर, कतीरा, मुरगी के अण्डे का छिलका और पारा बराबर-बराबर लेकर सिरके के साथ खूब पीस डालो। फिर उसे हाथों व पैरों में खूब रगड़ो। इसके बाद चाहे आग के ढेर में लोटने लगो तो भी न जलोगे।

(२) आग में कपड़ा न जलेगा

एक नया कपड़ा लो, उसे सात मरतबा घी ग्वार के रस में भिगोना चाहिये। फिर छाया में सुखाओ। इसके बाद उस कपड़े को आग में डाल दो तो वह जलेगा नहीं।

(३) आग से हाथ न जलेगा

नौसादर और कपूर को पानी में पीसकर हाथों में मलना चाहिये, फिर हाथों को सुखाना चाहिये। फिर हाथ पर आग रक्खो, हाथ नहीं जलेगा।

(४) सारा शरीर न जलेगा

जलभांगरा और मुलहटी के पत्तों को सारे बदन भर में मालिश करो, छाया में शरीर को सुखा लो।

फिर बे-दहसत चाहे गरम लोहे को उठालो अथवा आग में चले जाओ, कभी नहीं जलोगे ।

(५) पानी में दीपक जलेगा

चीनियां कपूर की बत्ती बनाकर दीपक में जलाओ और दीपक में पानी भर दो । दीपक बराबर जलता रहेगा ।

(६) बरसात में दीपक जलेगा

समुद्र फेन और गन्धक पीसना रुई में लपेट दो और उसकी बत्ती बनाकर तिलों के तेल में बत्ती जलाओ तो आँधी-पानी में भी जलता रहेगा ।

(७) पानी के ऊपर चलना

पुष्य नक्षत्र रविवार के दिन आलू की लकड़ी काटकर लावे, फिर बढ़ई से उसकी दो खड़ाऊँ बनवा लो । जब चाहो इस खड़ाऊँ को पहिन कर जल पर चले जाओ, कभी न डूबोगे ।

लकड़ी लाने का कायदा यह है कि शनीचर के दिन चावलों में हल्दी मिलाकर शाम के समय आलू के पेड़ को निमन्त्रण दे आवे और रविवार को सूर्यो-दय के समय लकड़ी काट लावे । पेड़ पर चावल छिड़ककर यह कहना चाहिये कि हम आपको कल

घर ले जावेंगे ताकि खड़ाऊं बन सकें ।

(८) दिन में तारे दीखें

सफेद सुरमे को सात दिन तक अगस्त के फूल के रस में तर करो । फिर इस रस के अंजन को आँखों में लगाओ । दिन में तारे दिखाई देंगे ।

(९) घर में साँप दिखाई देवें

ताँबे के दीपक में साँप-केंचुल की बत्ती जलाने से सब घर में साँप दिखाई पड़ेंगे ।

(१०) बोतल चबाना

बोतल के टुकड़े को आग में डालकर लाल करो तब उसे अदरक के रस में बुझालो । फिर उसे चबा डालने से मुँह में जखम पैदा न होगा ।

(११) लिखे अक्षर उड़ाना

नौसादर, सुहागा और शंखिया बराबर पीसकर लिखे हुए अक्षरों पर लगाकर धूप में रख दो । अक्षर उड़ जावेंगे, कागज सफेद निकल आवेगा ।

(१२) अण्डा उड़ जावे

एक अण्डे में छेद करके उसका सारा रस निकाल डालो, फिर उसमें ओस भरदो । उसका मुँह मोम से बन्द करके धूप में रखने से अण्डा उड़ जायेगा ।

(१३) पानी को दूध समझा जायेगा

अण्डो की मिगी निकालकर पानी में महीन पीस डालो, किसी बर्तन में मसल कर उसे सुखा डालो। फिर जब उस बरतन में पानी भरा जावे तो वह दूध दिखाई पड़ेगा।

(१४) चलनी से पानी न छनेगा

घी ग्वार का रस चलनी पर मसल कर सुखा लो। इस प्रकार सात बार करो, फिर उस चलनी में पानी छानो तो वह न छनेगा।

(१५) नीबू से लोहू निकलना

कठहल का रस छुरी में चुपड़ लो। फिर उसे सुखा लो, उस छुरी से जब नीबू काटोगे तो उससे लाल रंग निकलेगा।

(१६) मक्खियाँ भगाने का उपाय

अकरकरा और गन्धक व नरगिस की जड़ पानी में पीसकर दिवालों पर छिड़क दो।

(१७) शीशी में आग

एक कांच की शीशी में शराब अच्छी भरो और थोड़ी सी गन्धक डाल कर अन्धेरे में रख दो तो वह बोतल आग से भरी दिखाई देगी।

(१८) बिना खूंटी की खड़ाऊँ

सफेद चिरमिटी को घिसकर खड़ाऊँ पर लगा दो। छाया में सुखा लो। पैरों को पानी में धोकर बिना खूंटी की खड़ाऊँ को पर चढ़ालो और चाहे जहाँ चले जाओ।

(२०) रंग बिरंगे अक्षर

सफेद कागज पर नीबू के रस से अक्षर लिखो और आग में सुखा लो। तो आप दिखा देंगे। या फिटकरी के रस से श्वेत कागज पर अक्षर लिखो और आग पर सुखा लो तो ये अक्षर पढ़े जा सकते हैं। या आम के दूध से कागज पर अक्षर लिखे जावें और आग पर सुखा लो तो वे पढ़े जा सकेंगे।

(२०) नींद न आवेगी

हरियल चिड़िया की बीट और काली मिर्च को घोड़े के मुँह के झाग को मिलाकर अंजन किया जाय तो नींद न आवेगी।

(२१) भूख-प्यास बन्द होगी

साँगे के चावलों को गौ के दूध में खीर बनाकर रविवार के दिन जो आदमी खायेगा पन्द्रह (पौम) दिन तक बिना खाये-पिये रह सकता है।

(२२) घर में सांप न रहें

सिंह की चरबी और प्याज रख देने से घर के सांप भाग जावेंगे ।

(२३) चूहे भाग जावेंगे

ऊँट के दाहिने पैर का नाखून लेकर जिस घर में उसे जलाया जायेगा तो उस घर के सब चूहे भाग जावेंगे । या समुद्रके खार को आटे में मिलाकर गोली बनाओ, वे गोलियां घर में डालदो, चूहे भाग जावेंगे । या एक चूहे को पकड़कर नील के रंग में रंग दो और छोड़ दो. उसे देख सब चूहे भाग जावेंगे ।

(२४) दीपक पर पतंगे न आवेंगे

एक टुकड़ा प्याज का लेकर दीपक में डाल दो, पतंगे नहीं आवेंगे ।

(२५) खटमल भगाने का उपाय

जिस चारपाई या पलंग में खटमल हों तो उसमें छांछिया गन्धक की धूनी दे दो । सब खटमल मर जावेंगे ।

(२६) पक्षी पकड़ने का उपाय

जल में हींग पीसकर गेहूं रातभर भीगने दो । सुबह उनको छाया में सुखा लो । पक्षी उस गेहूं को

रविवार के दिन दोपहर के समय नंगा होकर चील व काग का घोंसला ले आओ। गूगल की धूनी देकर उसकी भस्मी करलो। जिस बन्द ताले पर उस भस्म को डालोगे वह अपने आप खुल जायेगा।

(३४) पानी से आग निकलेगी

चौबियाँ गन्धक और नौसादर दोनों की पोटली बनावे और जल की बूंद डालकर मसले तो आग पैदा हो जायेगी।

(३५) पवन से आग पैदा हो

ऊँट की सूखी मेंगनी जलाकर शहद में बुझाले, डिबिया में बन्द कर छोड़े। जब आग की जरूरत हो उसे हवा में खोलकर रखदो।

(३६) जुआ जीतना

हस्त नक्षत्र पर इतवार का दिन हो तो शनीचर को सांझ के समय लपा के पेड़ को निमन्त्रण दे आओ कि कल मैं आपको अपने घर ले चलूंगा और जुआ जीतने का यन्त्र बनाऊँगा। जुआ में जो भी जीतूंगा आधा दान कर दिया करूँगा। इतवार प्रातः सूर्योदय से पहिले जाकर उसे ले आओ। उसकी जड़ ले गूगल की धूनी देकर तावीज की तरह दाहिने हाथ में बांध

लो। जुये में शर्तिया जीतोगे।

(३७) विद्या पढ़ाना

माघ के महीने में कृष्ण पक्ष की अष्टमी को जब पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो आधी रात के समय गुरु से मन्त्र ले-'ॐ ह्रीं'। फिर गुरु से ही वह मन्त्र अपनी जीभ पर चन्दन लाल अनार की कलम द्वारा लिखावे। फिर उसका जप एक माला रोज करे। सरस्वती देवी की कृपा होगी। हृदय का अन्धकार दूर होगा, जो चाहोगे सो पढ़-लिख जाओगे।

(३८) चीनी के बर्तन जोड़ना

कलई का चूना और अण्डे की सफेदी, दोनों को मिलाकर पीसकर टूटे बर्तन चीनी मिट्टी वाले को जोड़ दो तो वह जुड़ जायेगा।

(३९) सोने को चमकाना

कलमी शोरा भून डालो, बराबर का चूना कलई वाला मिला दो। दोनों को मीठे पानीमें पीसकर सोने के ऊपर लेप करदो और धूप में सुखा लो तो सोना, सोने का जेवर चमकने लगेगा।

(४०) हथियार चमकाना

पुराने सिरके में कटोरो पीसो। हथियारों पर

चुपड़ दो और धूप में सुखा लो। सूख जाने पर रगड़ कर धो डालो। हथियारों पर जिलो हो जायेगी।

(४१) बिगड़े घी का सुधार

घी को कढ़ाई में रखकर चूल्हे पर चढ़ा दो, जब खूब गरम हो जावे तब काटकर प्याज डाल दो। जब वह जल जाये तब उतार कर छान लो। एक सेर में एक गाँठ काफी है।

(४२) अनाज में कीड़ा न लगे

चाहे मिट्टी का बर्तन हो या बोरे हो, हींग के पानी से करके अनाज भर देना चाहिये। कभी कीड़ा न लगेगा।

(४३) रेशमी कपड़े की चिकनाहट

रेशमी कपड़े पर चिकनाहट लगी हो तो उस पर सेलम खड़िया पीस कर डालो। तांबे या पीतल का बर्तन में भरकर उस पर फेरे तो चिकनाई जाती रहेगी।

(४४) बच्चों का नारा

अगर बच्चे का नारा कोई अपने पास रक्खेगा तो वह दो काम करता है। रोगी के तकिया के नीचे रक्खे वह काम करता है। रोगी के तकिया के नीचे

रक्खे तो वह जल्दी अच्छा हो जायगा। यदि किसी स्त्री को खिलावे तो पुत्र पैदा हो फिर चाहे वह बाँझ ही क्यों न हो।

हाजरात करना

अपामार्ग यानी लटजीरा यानी ओंगा सूखी लकड़ी लाओ उसमें रुई लपेटो उसकी बत्ती बनालो घी के दीपक में रखकर उसे जलाओ। किसी दस साल के बच्चे को स्नान करा कर कहो कि इस ज्योति की ओर देखो। उसे यक्षों का राजा दिखाई पड़ेगा। उससे जो बात पूछी जायगी उसका उत्तर वह देगा। राजा की आवाज केवल वह लड़का ही सुन सकेगा। हरेक सवाल का ठीक जवाब प्राप्त हो सकता है।

(५६) बिच्छू का इलाज।

शनिवार की शाम को अपामार्ग के पास जाओ। एवं डोरे को हल्दी में रंग कर साथ ले जाना चाहिये। पहिले वृक्ष की पूजा करो। फिर डोरे से उसे लपेट दो और यह कहो कि—हे वृक्षों के राजा। आपको हम परोपकार के लिये कल ले जायेंगे। यानी जिसको बीछी मारेगा उसका जहर आप उतार दिया करना। दूसरे दिन इतवार को सूर्योदय के पहिले जाकर उसको

समूल उखाड़ लाओ। छाया में सुखाकर रख छोड़ो। जब किसी को बीछो मारे तो वही पत्ती जरा सी पीसकर रख दो सारा विष बाहर निकल जायेगा। बीछी पर यह सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है।

(५७) उल्लू कल्प।

उल्लू का पित्त निकालो। उससे इस प्रकार से काजल बनाओ। जब रविवार को अमावस्या हो तब करे। उस दिन दो खोपड़ी आदमी की लाओ। श्मशान में जाकर नंगे होकर एक दीपक में उस विष यानी पित्त का दीपक जलावें और दूसरी खोपड़ी में काजल पारे। १०८ बार मं विधान से जपे उस काजल को तांबे के यंत्र में रख दो और उसका मुँख मोम से बन्द करदो उस ताबीज को मुँखमें रख लेगा उसको कोई नहीं देख सकेगा। उस काजल को अँजन करने से पृथ्वी का गढ़ा धन दिखलाई पड़ता है समस्त जोगनी उसे दिखाई देंगी। गोमूत्र से आँखें धोने पर असर चला जायगा।

तन्त्र

ॐनमोमहेश्वरीमरिमरिधन्वेविधनेपडेश्वरी कुरुकुरुस्वाह

(५८) उल्लु सिद्धि ।

रविवार के दिन जब अमावस्या हो एक उल्लू की चरबी निकालो। ऊपर लिखी हुई विधी से उसका काजल बनाओ। जो आदमी उस काजल को अपनी आँखों में लगावेगा तो वह सबको देखेगा मगर उसको कोई भी न देखेगा ।

(५९) उल्लू का गुण ।

रविवार के दिन जब अमावस्या हो तब उल्लू के दाहिने पैर की पिडली काटो। उसे तेल सरसों में डाल फिर पारा औ तांबा एक-एक छटांक उस तेल में डाल कर पीसो। उस अंजन को जो आँखों मे लगावेगा वह सबको देख सकेगा और उसे कोई न देख सकेगा गौमूत्र में नेत्र धोने से असर चला जायगा ।

उल्लू का एक हुनर

रविवार के दिन जब अमावस्या हो तब एक उल्लू तथा एक बिल्ली के नेत्र निकाले जावें उनको तेल में मिलाकर खूब महीन पीस लो मनुष्य अपनी देह में मसले तो वह किसी को दिखाई न पड़ेगा चाहे जहाँ चला जावे। गौमूत्र से शरीर धो डालने पर असर चला जायेगा ।

उल्लू का आखिरी गुण

जब रविवार को अमावस्या हो तब उल्लू के नेत्रों को सरसों के तेल में पीस लो। राम बन की रुई लो और श्मशान में जाकर दो खोपड़ी की मदद से काजल पारो उसको जो आंखों से लगायेगा वह सबको देखेगा। मगर उसको कोई नहीं देखेगा। गलोप करने के काम में उल्लू अव्वल नम्बर की उल्लू का दूसरा काम वशीकरन में चलता है।

वशीकरन का विधान।

रविवार अमावस्या के दिन उल्लू का पांस लो और केसर व लाल चन्दन एक-एक मिलाकर पीस लो और मूंग बराबर गोली नीचे के मन्त्र से बनाकर छाया में सुखाले। धूप गूगल की देकर रख छोडो। एक गोली मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री या पुरुष को पान में रखकर खिला दोगे तो वह वश में हो जायगा।

मन्त्र

'ॐ नमो महापंखेश अमुकस्य मम वश्यं कुरुकुरु स्वाहा'

दूसरा विधान

अमावस्या को रविवार के दिन उल्लू की बीट लाओ गूगल की धूनी दो। मन्त्र के साथ मिठाई में

मिलाओ और जिसको खिला दोगे वह वश में हो जायगा मन्त्र ऊपर वाला ही है। अमुकस्य है वहाँ पर उसका नाम लेना चाहिये कि जिसको वश में करना हो।

तीसरा विधान

अमावस्या वाले रविवार के दिन उल्लू का तालू लाओ पान में रखकर जिस औरत को खिलाओगे वह जन्म भर को गुलाम हो जायगी।

चौथा विधान

अमावस्या वाले रविवार को उल्लू के नेत्र, कुमकुम गोरोचन, नागकेसर इन चारों चीजों को खूब बारीक पीसना ले गोली बनाकर रख छोड़ो। राजा या शत्रु से मिलने जाय तो मन्त्र पढ़कर गोली को घिसे और अनामिका उंगली में लगावे। मन्त्र १०८ बार जपना चाहिये मन्त्र वही ऊपर वाला है। इससे राजा और शत्रु दोनों वश में हो जाते हैं।

पांचवां विधान

अमावस्या वाले रविवार को उल्लू की चोंच ले आओ नागकेशर, गोरोचन, सफेद आक की जड़, इन चार चीजों को लेकर पीसो जल के साथ। ऊपर वाले

मन्त्रके साथ तिलक लगाओ। फिर जिसको भर आँख देखोगे वही वश में हो जायगा।

छठवाँ विधान

रविवार अमावस्या के दिन उल्लू के कलेजे के साथ मैनसिल, असगंध, चमगादड़ की बीट, भैंसे का सींग, कूट गौरोचन, और केसर बराबर-बराबर लेकर गौमूत्र में खूब पीस उसी मन्त्र से तिलक करे और जिस सभा में जावे तो सारी सभा उसी के मन मुताबिक काम करेगी।

सातवाँ विधान

रविवार अमावस्या के दिन उल्लू की जीभ और ढाई पत्ती नीम की लेकर खूब महीन पीस लो। उसका अंजन आँखों में करो फिर जिसकी आँखों से आँख मिलाओगे वह वश में हो जायगा।

वशीकरण की बुरकी।

रविवार अमावस्या के दिन घुग्घू और बिल्ली यानी मजरी के नेत्र लाओ इसमें पारा, केशर, बच मिलाओ और नागरस, सरसों, बाग, केशर, इन सबको बराबर तोलकर मिलादो। ले जाकर मरघट पर गाड़ दो। सात दिन बाद उखाड़ लाओ जिसके

ऊपर इस बुरकी को डालोगे वह वश में हो जायगा।

उच्चाटन का विधान।

रविवार या मंगलवार के दिन उल्लू का और काग का पर लाओ। दोनों को डोरे से सीकर जलादो वह भस्म जिसके सिर पर डाल जायगी वह वहां से चला जायगा।

मार्ग चले और थके नहीं।

रविवार को उल्लू की चोंच और पैर लाकर दोनों को जलाकर भस्म बनाओ। बेल का चूरन उसमें मिलाओ उसे पैरो के तलबों में लेप करो। १०८ बार मन्त्र जपो। मन्त्र यह है—'ओम नमो महापंखी अमृत कुरुकुरु स्वहा।"

स्तम्भन विधान।

उल्लु की जीभ और एक रत्ती गोरोचन दोनों की गोली बनाओ। ताँबे के ताबीज में रखकर उसका मुँह बन्द कर दो। गूगल की धुप दो। फिर मुँह में रक्खो। तो स्तम्भव होगा।

संग्राम में विजय

उल्लू के चारों पैरों को नला लाओ उसमें पारा भरो गंधक व शीला थोथा में उसको धर दो। इस

मंत्र से १०८ बार जपो और गूगल को धूपदो । उसे अपनी जेब में रक्खो तो युद्ध में विजय प्राप्त हो ।

मन्त्र

अहो कुंभकरन महा राक्षस महावीर महावीर महा सूरमा अकुम विजय कुरुकुरु स्वाहा ।

शत्रु के घर में कलह हो ।

उल्लू के पंख लाकर रविवार को शत्रु के घर की सीमा में गाड़ दो । १०८ बार यही मन्त्र वहां पर फूंक दो ।

मन्त्र

ओम नमो पंखेश अमुक ग्रहे कलह कुरुकुरु स्वाहा "

'अमुक' शब्द की जगह उसका नाम लेना चाहिये ।

उच्चाटन का काम ।

रविवार या मंगलवार के दिन उल्लू का सिर लाओ खूब महीन पीसो ; चुटकी भरकर जिसके सिर पर डालोगे वह गांव छोड़ भाग जायेगा ।

दूसरा विधान ।

उल्लू की बाढ़ और नीबू की लकड़ी-बिल्ली का नाखुन-चावल-श्मशान का वस्त्र- इन सबको धतूरे के रस में डालो । इन सबको पीस शत्रु के स्थान में

डाल दो । उसका उच्चाटन हो जायगा ।

स्त्री पुरूष में कलह हो ।

उल्लू का मस्तक और काग का नख मंगाकर दोनों को खुब पीसो । गूगल की धूनी देकर इस मन्त्र को जप कर सिद्ध करो । १०८ बार मन्त्र जप कर उस चूरन की २१ गोली बनाओ । हवन भी करे । स्त्री पुरूष में कलह हो । मन्त्र यह है । 'ओम'पंखेश नमो अमुके अमुकी मध्ये कलह कुरूकुरू स्वाहा ।

दो मित्रो शत्रुता हो

उल्लू के नेत्रोंको गूगल की धूनी देकर इस मन्त्र से जमावे और उसे दो मित्रों के मध्य में डाल दे तो अवश्य लड़ाई हो जावे ।

मन्त्र—"ओम नमो वीर हूँ नमः" ।

भूत प्रेत उतारना ।

घुग्घू का चाम और मांस दोनों अलग पीस कर शनिवार और रविवार को मिलाले और जिस स्थान पर भूत प्रेत हों उस स्थान पर धूनी दे तो अवश्य भूतप्रेत निकल जावे ।

सर्व कामना पूरी हों ।

घुग्घू की पीठ का हाड़ला कर उसे घिसकर उसका तिलक लगावेतो सब तरहकी कामना पूर्णहो ।

मन्त्र

ओम नमो महा पंखेश खर्रा आगच्छ आगच्छ अतुल्य बलं पराक्रमाय सर्व कामनी मम वस्यं कुरुकुरु मन्त्रेश्वरी ओंठाठः फट् स्वाहा ।

शत्रु वशीकरण

घुग्घू की चोंच और पग दोनों को मिलाकर पीस ले और उसकी बुरकी के ऊपर एक सौ आठ मन्त्र जपे और मस्तक के ऊपर डाले तो शत्रु वश में हो ।

काले बाल सफेद हों

सेंघड़ का दूध लाकर इसमें तिलोंका तेल मिला मे और तीनों को पीसकर काले बालों पर लेप करे तो काले बाल सफेद हो जावें ।

बाल निकालें

जौ को लाकर सुखायें और इसकी भस्म कर कडुआ तेल मिलाकर पीस ले और जहाँ बाल न हों वहाँ लगावें तुरन्त बाल निकल आवेंगे ।

केश बढ़ाने की विधि

घोड़े की लीद को कोयला करके तिलों के तेलमें महीन पीसकर बालों में लगावे तो बहुत बढ़ जावेंगे।

तथा

हाथी दाँत को कुल्हड़ में रखकर मुँह बन्द कर दे और कुल्हड़ को आग में रखकर बन्द करे फिर सुराख से धुँआ निकाल दे फिर उस भस्म को जलमें लेकर बालों पर लेप कर सो रहे और सुबह धो डालो बाल बढ़ जावेंगे।

उड़े हुये बाल जमे

हाथी दाँत की भस्म भेड़ के दूध में मिलाकर पीसे और रत्ती भर रसौत मिलाकर उड़े हुये बालों की जगह लगावे तो फिर बाल उपज आवें।

तथा

मक्खी की भिष्टा और काली मिर्च दोनों को पीस ले और बालों पर लगावे तो उड़े हुये बाल फिर उपज आवें।

बाल उड़ाने की विधि

वेदन्ती हरताल पांच माशे जवाखार पांच माशे पोस्त राख दश माशे तथा सब को केले के रस में

पीस ले और बालों पर करे जब सूख जाय तो हाथ से पोंछकर पानीसे दवा धो डालो बाल उड़ जावेंगे।

बाल न उपजें

मरी हुई जोंक कई एक सुखा कर घोड़े की लीद में गाढ़ दे और चालीस दिन बाद निकाल कर उसे पीस ले फिर उसे लगावे तो बाल वहीं उपजेंगे।

बाल न उपजें

हरताल १ तोला चूना ७ तोला गन्धक २ तोला इन सबको कांजी के जल में अच्छी तरह पीस कर छाया में सुखावे फिर जब बाल उड़ाना हो तो पानी में मिला बालों पर लेप करे तो बाल उड़ जावेंगे।

मस्सा दूर हो

कलमी शोरा मूलीके रस में पीसकर मस्सा काट कर उस जगह लगावे तो मस्सा दूर हो जायगा।

मस्सा दूर हो

सज्जी और चूनेको बराबर २ पीसकर मस्से पर लगावे तो मस्सा दूर हो जायगा।

सुजाक जाय

सेलख खड़िया और भंग ६—६ माशे लेकर दोनों को आधा पाव दही में मिलाकर पी जावे तो सुजाक

को आराम हो जाये ।

सुजाक को आराम

कलमी शोरा छोटी इलायची और श्वेत चीनी इन तीनों को पीसले और सबको बराबर मिश्री मिला कर सब की पुड़िया बनाले और गौ का दूध लाकर एक सेर की लस्सी बनाकर पुड़िया की फंकी मारे और लस्सी पिये तीन दिन तक यही क्रिया करने से आराम होगा ।

सुजाक का तीसरा उपाय

तीन मांस भांगरा और ५ काली मिर्च लेकर और पाव भर जल के साथ पीवे तीन दिन यही क्रिया करने से आराम होगा और पेशाब करते जलन न गरम बादी खटाई का परहेज रक्खे ।

सुजाक की चौथी विधि

गन्दे बिरोजे का सत तीन माशे बंशलोचन दो माशे इन दोनों को पीसकर गौ का दूध १ पाव के साथ फंकी मारकर पिये और सात दिन इसी क्रिया को इसी मात्रा में करे तो सुजाक आराम हो । मगर बादी खटाई से परहेज रक्खे ।

वशीकरण

जो मनुष्य किसी को अपने वश में करना चाहे तो शनिवार के दिन काले काग की जीभ और शमशान की भस्म लाये और अपने बीसों नाखून कटवा कर उसकी भस्म बनाये और जिस स्त्री या जिसे वश में करना हो उसके बाँए पग की रज और चौराहे की रेत मिलाकर पीस ले और सब मिलाकर उसको बुरकी उसके सिर पर डाल के और २१ बार नीचे का मन्त्र पढ़े ।

मन्त्र

ओम धूली धूलेश्वरी धूलीमाता परमेश्वरी जहाँ लगाऊँ तहाँ लगे न लगे तो मुझे राजा रामचन्द्रकी आन है ।

वशीकरण दूसरी विधि

चील कें नेत्र को केसर और कस्तूरी में पीस कर गोली बनाये और जिसे बस में करना हो उसे पान में रखकर खिलाय तो अवश्य बस में हो ।

वशीकरण की तीसरी विधि

अपने बीसों नाखूनों को सात शनीचर और सात इतवारों तक बढ़ाके कुटक बढ़ या चिड़िया के नाखून को कटावे और अपने नाखूनों को काट सबकी भस्म

कर माखन मिला जिसे खिलावे वश में हो जायगा।

खटमल के गुण

खटमल है दो गुण हैं १ तो उसके दो टुकड़े नीचे और ऊपर के करदे नीचे का टुकडा जो स्त्री खावे उसका रितुकाल का रुधिर अगर रुका है तो खुला जाल और ऊपर का टुकडा जो स्त्री खावे तो उसकी बहती हुई महावारी रुक जावे।

पेट का मरा बालक बाहर निकेले

खटमल को गौ के छटांक भर गोबर में पीस ले और ड़ेढ़ पाव जल में घोलकर स्त्री को पिलादे तो मरा हुआ बालक बाहर निकले।

गर्भ की पहचान

७ या आठ माह की गर्भणी के स्तनों की घुण्डी दबाने से अगर दूध निकले और भीतर ही फिरा करे तो पुत्र जानो अगर दूध निकले तो कन्या जानो।

गर्भ रहने की विधि

रजस्वला होने के बाद चौथे दिन से आठवे दिन तक ३ माशे नाग केशर रोज खावे तो अवश्य गर्भ धारण हो।

गर्भ धारण की दूसरी विधि

रजस्वला होने के बाद पारस पीपल के बीज २ तोले किसी रंगीन गाय के आधा सेर दूध में खीर बनावे और नीचे के मंत्र से १०८ बार मन्त्र जपे और उस स्त्री को वह खीर खिलावे तो अवश्य गर्भ स्थिर हो। मंत्र-ओम नमो भास्कर विस्नुरुपाय अमुके पुत्र उत्पति कुरुकुरु स्वाहा।

बैरी का मूत्र बन्द करने की विधि

रविवार को छछूंदर को मार के उसकी खाल काट ले और जिस जगह बैरी ने मूता होय उस जगह की मिट्टी लाकर उस खाल में भर के सियें उसे किसी ऊंची जगह पर टांग दे तो अवश्य मूत्र बन्द हो जायगा और जब ठीक करना हो मिट्टी खाल में से निकाल दे तो पेशाब खुल जायगा।

बैरी बावा हो जाय

रविवार या शनिवार को बैरी की जूती जो कि उल्टी पड़ी हो उठा लावे और पानी में गरम करे तो बैरी अवश्य बावा हो जायगा।

बैरी दुख पावे

चन्द्रवार अथवा मंगलवार को भस्म लगाकर

उसी दिन राई और आक का कोयला करके सबको मिला कर अग्नि में बीस आहुति दे और आहुति देते समय बैरी का नाम इस तरह से लेता जाय कि अमुकस्य हन हन स्वाहा ।

बैरी के ताप का उतार चढ़ाव

रविवार को जब पुष्य नक्षत्र हो तो जंगल में जाकर इन्द्रायान की जड़ लाए और पीपल सोंठ मिर्च इन सबको मिलाकर बकरी के दूध में पीसकर गोली बांधे और धूप देकर बैरी के सिर पर डाले तो उसको बुखार चढ़े और वह बेहोश हो जायगा परन्तु कांजी के पानी में स्नान करने से आराम हो जायगा ।

बैरी बावला हो

काग के दाहिने बाजू का पंख और स्यार की पूंछ रविवार के दिन लाओ और गूगल की धूप देवे और बाजू को उसके पलंगमें घुरस दे तो बैरी जब सोयेगा बावला हो जायगा ।

भूताविक जाने की विधि

रविवार के दिन काले धतूरे की जड़ ला के मरीज की बाँह पर बांधे तो भूत तुरन्त उतर जायगा और फिर कभी न सतायगा ।

ब्रह्म राक्षसादिक जाय

गोरख मुंडी, गोखरू और बिनोला तीनों को बराबर लेकर घी मून में डाले और मरीज को इसका धांस दे अवश्य ब्रह्मराक्षसादिक भाग जाय ।

देवी देवता दीखें

अकोला के फूल के तेल में अगर के फल का चूरन मिला कर आँखों में आँजे तो देवता दिखाई दें और जो तगर कर तेल आंखों में आँजे तो मनुष्य ही दिखें देवता नहीं ।

चरित्र दीखें

रविवार को चिरचिटे की जड़ लाए और उसको रुई में रखकर बत्ती बनाए और दीपक में काली गऊ का घी भरके उसमें वह बत्ती जलाए और चोक में रख गूगल की धूप देवे तो अनेक चरित्र नजर आवें ।

रसाइन बनाने की विधि

तबकिया हरताल और हलिया जहर और पारा तीनों चीजें एक-एक पैसा भर लेकर एक पहर ग्वार के रस में खरल करे । और फिर गोल टिकिया बनाके उस को सपुट में धर दे फिर सीप के चूने में बंद कर दे और कपड़ा मिट्टी कर २।। सेर कंडोमें फूंक दे फिर

जब आग ठंडी हो जाय तो उसे निकाल तांबे को अग्नि में गलाकर उसमें उपरोक्त भस्म छोड़े तो बहुत बढ़िया सोना तैयार हो जावे ।

रसायन का दूसरा प्रयोग

हरताल शंखिया-पारा और शिगरफ इन सबको बराबर लाकर चालीस पहर नीबू के रस में पीसे जब सूख जाय तो इस जंच में रखकर आतसी शीशी में डालकर उसका मुँह गुण सीप के चूने से बन्द करके और उसके ऊपर खूब कपड़ा में मिट्टी करके ईश्वर का ध्यान करे और पांच-सेर उपलों में धरकर फूंक दे जब अग्नि ठन्डी हो जाय तो उस भस्म को रख छोड़े फिर एक तोला तांबा गलाकर एक रत्ती भस्म छोड़े तो ईश्वर चाहेगा तो आला नम्बर स्वर्ण हो जायगा ।

सोना विधि

एक बिजौरा लेकर १ छटांक आंवला सार गंधक लाकर उसके रसमें अट्ठाईस पहर खरल कर उसकी गोली बना आतशी शीशी में भर पाताल जन्त्र करके उसका तेल खींच ले तो उस तेल को तांबे पर लगा कर अग्नि में तपावे तो सोना बने ।

गुटिका चलते चलते न थके

काले तीतर की गर्दन सुखा रक्खे और चौथे दिन उसकी चोंच खोल उसमें पारा डाल दे और गाय के दूधके भीगे चावल उसे खिलाये जाए फिर जब तीतर बीट करे तो बीट पिंजरे से निकालो उसमें पारे की गोली मिलेगी यही गोली मुंह में रखकर कितना भी चलो थकोगे नहीं।

वस्तु बिके और शत्रु खरीदे

जिस वृक्ष पर पागल हो उसे शनिवार को निमन्त्रण दे आए और इतवार को प्रातः उसकी डाली लाकर गूगल की धूनी देवे और फिर पैर के नीचे दबाकर बैठ जाय और १०१ बार मन्त्र जपकर डाली सिद्ध करले तो उस डाली के पत्तों को सिर रखकर व्यौपार करे तो बैरी इच्छानुसार कीमत देकर माल खरीदे। मन्त्र—ओम नमो चंड अलसुर स्वाहा।

गढ़ा धन दीखे

लाल पूंछ की बामनी के खून और सेबसिब को पीसकर अंजन लगावे तो गढ़ा धन दिखाई दे।

रिद्धि सिद्धि

भादों कृष्णपक्ष में जब भरनी नक्षत्र हो तो मिट्टी

के घर में चौकाकि करके चार कलश भर कर रक्खे और गूगल की धूनी देकर विधि पूर्वक उसकी पूजा करे फिर दूसरे दिन देखे जो कलश खाली हो गये हो उनमें फिर अन्न भर दे और एकान्त में रख नित्य उसकी पूजा विधि से किया करे और भरे हुए कलसे को घर में छिड़क दे तो अन्नपूर्णा देवी उससे प्रसन्न हो उसको कभी भूखा नहीं रहने देती है उसे ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होती है।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि

इन मन्त्रों को जब कोई मनुष्य सिद्ध करना चाहे तो उसको चाहिए ब्रह्मचर्य होकर शुद्धता के साथ एकान्त स्थान में जहाँ कोई न आ सके अपने चारों तरफ धूप दीपक फूल अतर मिठाई रख ले और इस मन्त्र को अपने ऊपर पढ़ फूंक लेना चाहिए और आसन के चारों ओर तीन कुण्डली खींच ले क्रिया शुरू होने पर फिर न किसी से बोले और न लकीर से बाहर निकले मन्त्र का जप जब बन्द हो जाय तो जो वीर बोले उसका जवाब दे।

मन्त्र

हाथ बसे हनुमन्त भैरों बसे लिलार जो हनुमन्त

का टीका करे सोहे जग संसार जो आवे मार-मार करता सो पीछे पाँव जगन्ता हनुमन्त वीर पंजा दे रहे मुहम्मदी वीर छाती तो दे जुगनियाँ वीर सिर मोड़े उगनियाँ वीर मार मरम्मत करे श्रीसिह वीर प्रकट गाजे भेरो वीर की आँन फिरतो रहे जो हमारे ऊपर घाव गाले उलट हनुमन्त वीर उसीको मार जल बाँधू कुदुंक और काया चेत रहे प्रावी हनुमन्त वीर आया बाँई तरफ सवाई तपै लोहा कच पड़े घाई लाल चक्र चर्का असमान छाया हाँक ललकार हनुमन्त वीर शक्ति पानी हो जासे राजा महाराजा विराजा साहब सत्य के पुत्र धर्म कि नाती तुम्हारा ही आसरा है।

तरकीब—आठौ पहर व्याध से बचने का मन्त्र ऊपर लिखा गया है। जो मनुष्य प्रातःकाल स्नान करके नित्य पढ़े और कनिष्ट ऊँगली पर फूँकके बाई हथेली पर तीन कुण्ड खींचकर तिलक लगावे तो आठ पहर हर बला से बचेगा।

मन्त्र देह रक्षा का

ओम् पर ब्रह्म परमात्मने नमः मम शरीर पाहि पाहि कुरु स्वाहाः १०८ बार यह मन्तर जपे तो सिद्ध

हो फिर हर एक सिद्ध के पहिले अपनी देह रक्षा का यही मन्त्र पढ़ के चले ।

लोक वशीकरण मन्त्र

नेब का पत्ता, बिजौरा और नमक लेकर उसमें बकरी का दूध डालकर पीसे और नमक लगावे तो लोक के प्राणी वश में होवें ।

विधि

सिद्धि के लिये शनिवार से २९ वें दिन रात के समय साफ स्थान में पवित्र होकर एक पुतली बनावे और उसका सविधि पूजन करें । फिर दीपक धर गूगल की धुप देवे । उस मन्त्र को २१ बार जपे तो सिद्ध हो शनिवार सवा पाव लपसी का भग करे, और पाँच दिन बताशे का भोग करे ।

गर्भ स्थिर रहे

कुँवारी कन्या को स्नान कराकर रविवार के दिन सूर्य के सामने बैठकर ढई सूत के सात हाथ का डोरा भटे फिर तीन २ गाँठ बकर दो गडे बनावे और नीचे लिखे मन्त्र को २१ बार पढ़े । गूगल को धुप देकर एक गले में और दूसरा गंडा कमर में बाँधे तो गर्भ निश्चय रहे ।

मन्त्र

ओ३म नमो आदेश गुरु को ।ओ३म संतबर पुष्प पाव को राव थंबे गर्भ छोड पाप उकवा मासगर्भ की वासा पर साही लेद तिगास गोरी माता धर्म को राखो हनुमन्त गन्डा बाँध लेओ दस माँस, बीस बार मन्त्र जपो आदेश गुरु की अंड–सुपारी दीजिये अनु राधा के माँह, जाको दूध दीजिये कड़े बंधावे ताही गर्भ तिरिया नहीं रहे जाही का ताला ।

श्रेष्ठ वशीकरण

घी ग्वार को अला भाँग के बीज मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है ।

राजा वशीकरण का मन्त्र

ओ३म नमो आदेश गुरु का जला बाधु, शहर बाँधू, अग्नि बांधू, वार बन बाँधू, शिव पुत्र प्रचन्ड बाँधू, राजा का इकरसा आंगन छोड़ मुजे वसन देशीं असली जोकों चन्दन ललाट दीको कोढ़ी सिसत्तर्न कहाऊ पोन गुरु की उक्ति मेरी कवित करो मन्त्र ईश्वरो वाच ।

धूप, दीप नैवेद्य घर की पार्वती का ध्यान करो शनिवार के दिन २१ दिन १२१ जप करे । मन्त्र

सिद्ध होयगा। पश्चात कुंकुम, चन्दन गोरोचन मिला कर गाय के दूध में तिलक कर राजा के सन्मुख जावे तो देखते ही राजा वश में हो।

अनोखा वशीकरण

चिता की भस्म, वच, कूट, केशर और गोरोचन इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बना जिस औरत के सिर पर छोड़ेगा वह अवश्य ही वश में हो जायगी।

राजा वशीकरण मन्त्र

रुष्ट भूपति वा रुष्टि राजकर्मचारी को प्रसन्न करने के निमत्त जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक एकाग्र चित्तसे मन्त्र का जप करेगा उसका सब भय जाता रहेगा।

विधि—दिवाली को रात्रि को अष्टगंध से लिख धूप दीप नैवेद्य १०८ मन्त्र का जपकर पगड़ी में रखे

यह मन्त्र पत्थर पर लिखकर चूल्हे में गाड़कर ७ दिन रक्खे। मन्त्र के नीचे जिसे वश में करना हो उसका और उसकी माता का नाम लिखे।

वशीकरण मन्त्र

धूली २ विकट चाँदनी पट मारू धूली फिर दिवानी घर तजे बाहर तजे, ठाड़ी भातार तजे दे दी दिवानी एक सण्टी कुलवान तू नारसिंह वीर अमुको

को उठाई न्याय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाच ।

विधि

जो नारी शनिवार को मरे उसके पाँव के नीचे अँगार लेकर कोरे मिट्टी के बर्तन में रखकर ७ बार जिसके माथे पर लगावे सो वश में हो जावे ।

नारी वशीकरण मन्त्र

रविवार के दिन हाथ और पैर के नखों को राख पानी में रखकर खिला देवे तो नारी वशमें हो जावे ।

तथाच

काँगनी, सौंप, केशर, शंलोचन इसको घोड़ा के मूत्र में लेप बनाकर योनि पर लेप करे तो यह लेप पुरुषों को वश में करने वाला है ।

तथा नीम की लकड़ी धूप बना फिर भग पर लेप करके जो औरत अपने पति से रमण करती है तो वह उस पति को अपना दास बना लेती है ।

सब कार्य सिद्धि यन्त्र

इस मन्त्र को बाँस की कलम से सफ़ेद चन्दन से कुंज अथवा ताँबे की थाली में लिख तो सब कार्य सिद्ध होंगे ।

औरत वशीकरण

जिस मनुष्य की औरत रुष्ट होगई हो वह निम्न लिखित मन्त्र द्वारा वशीभूत करे ।

मन्त्र

ओम नमो रुद्राय नमः काम देवायः यस्य यस्य व्रव्यो भवानि पश्चिय मुख कुरु कुरु स्वाहा ।।

विधि—श्मशान भूमि में रात के बारह बजे नित्य प्रति जाकर सवा लाख मालायें जपे अथवा रातके २ बजे पर वृक्ष के नीचे बैठकर सिद्धान्त द्वारा मन्तर का एक लक्ष जाप करे तो सिद्धि को प्राप्त होगा ।

पुरुष वशीकरण

जिस नारी का पति रुष्ट होगया हो उसको वशी भूत करने में निम्नलिखित मन्तरों का प्रयोग करे ।

मन्त्र

ओम नमो महायक्षणे मत पतिये वशवं कुरुकुरु स्वाहा

यक्षणी वशीकरण

इस मन्तर में सिद्ध करने वाले मनुष्योंको कारण पिशात्व कहते हैं । जिस मनुष्य से यक्षण प्रसन्न हो जाती है वह कालदर्शी हो जाता है । अर्थात भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालोंका हाल उसे मालूम

रहता है श्री दत्तात्रेय जी इस मन्तर को इस प्रकार कहते हैं।

मन्त्र

ओम हूँ अँकुं क्रौं कट यक्षणी महादेवी बलिवान सिद्धः चावलमः

विधि--व्यास पूर्णिमा के दिन प्रथम और कर्म करावे फिर आदित्यवारके दिन पुष्पनक्षत्र में स्नानादि से शुद्ध होकर संधि के समय श्मशान भूमि में जावे और वहीं पर सोवे। प्रातःकाल सूर्योदय से प्रथम उठकर शौचादि से फारग होकर स्नान करे और उपरोक्त मन्तर को एकाग्र चित्त से १०८ बार जपे। इस प्रकार इकसठ दिन तक जप करने से मन्तर सिद्ध होकर साधक को अपना फल दिखायेगा।

शत्रु वशीकरण

यदि किसी मनुष्य से दुश्मनी हो गई हो तो उस को बश में करने के लिये निम्न मन्तर का जाप करे.

ओम अघोरे अघोरे कर्म करके हूं हूं फट् स्वाहाः ॥

अमुक दुश्मन वश्यं वश्यं स्वाहाः ॥

विधि—जिस मनुष्य से वैर हो गया हो अमुक के स्थान पर मन्तर जाप करते समय वैरी का नाम लेता

जावे, उसकी क्रिया इस प्रकार करे कि प्रातःकाल स्नानादि से निश्चिन्त होकर निर्जन स्थान में आम के पेड़ के नीचे जावे और उसकी कोपल में दोनों हाथ की मुट्ठी बाँधकर लगावे मन्तर के अन्तिम शब्द स्वाहा पर दोनों मुट्ठी कोपल के भीतर छोड़ दे और फिर मुट्ठी बाँधकर जप करे इस प्रकार इक्कीस दिन तक नित्य प्रति एक सौ आठ बार जप करे।

वशीकरण

पुष्य नक्षत्रमें रविवार के दिन सहदेई को उखाड़ लावे और छाया में सुखावे। इसके बाद पान में जिस औरत को खिलावे वह निश्चय ही वश में होवेगी।

पति वशीकरण

गोरोचन और मछली का पित्त मोर शिखा और घी इन सबको मिलाकर नारी अपनी योनि पर लेपन करे इसके बाद रति ररे तो मैथुन भावसे पति उसका दास हो जायगा। रूप यौवन सम्पन्ना ऐसी नारी के बिना अन्य किसी की भी इच्छा न करेगा।

तथाच

कत्थ बिल्वपत्र और गोरोचन, मैनसिल इन सबको बराबर भाग में लेकर तांबे के बर्तन में सात

रात पर्यन्त तेल में पचाकर रखें। तदनन्तर इस प्रकार बने हुये तेल को योनी पर लेपन करके पति के समीप जावे तो मैथुन भाव को प्राप्त होकर पति जिसका दास हो जाता है, इसमें अन्यथा नहीं जानना

तथा वशीकरण मन्त्र

शनिवार के दिन एक पुतली बनाकर उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे और १०८ बार मन्त्र पुतली को दिखावे और पुतली को छाती से लगा रक्खे तो मनचाही नारी बेचैन होकर हाजिर हो जायगी।

महामोहन मन्तर

ओम श्रीं धुं धुं ठः ठः

चिपका पक्षी का पंख परवा को लेकर कस्तूरी में पीस मन्तर पढ़ उसका तिलक करें जो देखेगा मोहित हो जायगा।

स्वामी वशीकरण मन्तर

ओं छुं छुं छों छाँ डः

चांघोली के फल की गुठली की माला ले सूर्य पर्व को नदी के किनारे आमली पेड़ के नीचे सोमवती अमावस्या के दिन कुशाओं के आसन पर बैठकर जपे तो स्वामी वश में हो।

वशीकरण मन्तर

इस मन्तर को भोजपत्र पर कपूर, चंदन, गोरोचन को स्याही चमेली की कलम से लिखकर सात दिन तक पूजा करे और तावीज में मढ़वाकर बांह में बांध ले फिर जिसके पास जावे, वशीभूत हो जायगा।

मोहनी पुतली—वशीकरण मन्तर

बांधू इन्द्र को बांधू तारा बांधू बिन्द लोंही की धारा उठे इन्द्र न बोले बवा सूक साख पूनी हो जाय बन ऊसर लोकां कड़े होया ऊपर लो सूत में तो बन्धन बांधियों सास-ससुर जाया पूत मन बांधू मन्वत विद्या दे साथ चार खूंटलों फिर आये फलाना के साथ गुरु गुरो स्वाहा।

विधि

सिद्धिकरण शनिवार से २९ दिनके समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होकर एक पुतली बनावे और उसका सविधि पूजन करे। फिर दीपक धर गूगल की धूप दे इस मन्तर को २१ बार जपे तो सिद्ध हो। शनिवार के शनिवार सवा पाव लपसी का भोग लगावे और पांच दिन बताशा का भोग धरे।

वशीकरण सुपारी मन्तर

'ॐ नमो भागवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुर बाहनाय जिसको वश में करना चाहे उसका नाम ले (अमुक) अच्छा मुहूर्त देख १०८ बार मन्तर को जप कर सुपारी पढ़कर जिसको खिलाये वह निश्चय वश में हो जायगा।

तथा मन्तर

ओम क्लीं सः श्रमुकं मे वश कुरु कुरु स्वाहा।

एक लाख मन्तर जपे, सिद्ध हो।' फिर एक हजार जप कर केशर, चन्दन, गोरोचन और कपूर मिलाकर दूध में घिसे तिलक करे तो जिस राजा के सन्मुख जावे, वश में हो।

वेश्या वशीकरण

ओम द्राविणी स्वाहा ओम ह्रामिले स्वाहा।

दस हजार जप कर मन्तर सिद्ध करले। उसके पीछे ओंगा का गूगा ४ अंगुल निकाल लेवे और इस मन्तर को सात बार उस पर पढ़कर वेश्या के घर में गेर दे तो वशीभूत हो।

वशीकरण मन्तर

पुष्य नक्षत्र रविवार को जब होय तब सहदेई को लाकर छाया में सुखाये। इसके बाद पान में जिस

नारी को खिलाए वह निश्चय वश में हो।

माघ महीने में जब बुध और अष्टमी को स्वाती नक्षत्र हो तो उस दिन आम वृक्ष को एक पैसा और कसैली से न्योता दे आए प्रातःकाल (दूसरे दिन) उस का कोपल तोड़ लाए तो वह जिस औरत के सिर पर डाले वह सर्वदा उसके वश में रहेगी।

यदि औरत पुरुष को वश में रखना चाहे तो वह चेटक करे। तोरी सरसों, तुलसी, धतूरा, ओंगा और तिल का तेल सब को खूब बारीक पीसकर तेल मिलाकर बदन में लगावे तो जिस पुरुष को चाहे वश में रखे।

तथाच

पुष्प नक्षत्र में धोबी के पैर की धूली ले आए जिस औरत के सिर पर रविवार के दिन संध्या के समय डाले वह वश में हो जायगी।

वशीकरण सुरमा

इन्द्रजाल के रचियता का मत है कि इस सुरमे को लगाकर जिस नारी पुरुष की ओर देखोगे वही वशीभूत हो जाएगा।

सुरमा बनाना

गोरोचन घुग्घू का पित्ता, काढ़ निकार पावे जित्ता।
उतना वेय मिलाकर घी, आंज नैन सुखी होगी॥

अर्थात–गोरोचन और घुग्घू के पित्ते लाये और उसको घी में मिलाकर लगाए। लगाने से पहले वह देखले अथवा किसी सुयोग्य वैद्य से आँखों की परीक्षा कराकर देखले कि यह सुरमा उसके मुफीद होगा या नहीं यद्यपि इन्द्रजाल वालों ने ऐसे अनेक तन्तरों का विधान किया है। परन्तु यह असम्भव से ज्ञात होते हैं। इसलिए पाठकगण इन तन्तरोंको खूब होशियारी के साथ समझ बूझकर काम में लावें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि होने का भय है।

वशीकरण पान

वशीकरण पान सुरमा, अँजन इत्यादि चीजें बनाने की विधि रावण कृत उडीस तन्तर या दत्तात्रेय जी ने अपनी दत्तात्रेयीय नामक पुस्तकों में लिखा है। उन्हीं का भाषा अनुवाद यहां पर किया जाता है। कहीं-कहीं पर इन्द्रजाल वालों ने भी उन्हीं का वर्णन किया है।

वशीकरण धूनी

जिस औरत या आदमी पर भूत प्रेतात्मा का प्रभाव हो और वह किसी प्रकार नहीं जाता हो तो निम्नलिखित धूनी से काम लेवे और उसको अपने वशीभूत कर उतारे।

धूनी बनाना

इस धूनी के बनाने में दत्तात्रेय जी कहते हैं कि—

काली सरसों कुचुकी, हींग नीम के पात।
बच औंगा गूगल, मिला तुरत करे कुशलात॥

अर्थात— काली सरसों, कैचुकी सर्प की, हींग, नीम के पत्ते, बच औंगा के पत्ते और गूगल इन सबको कूट पीसकर धूनी बनावे और समय पड़ने पर अग्नी पर डाल कर धूआं भूताबी ग्रहस्थ को देय तो वशीभूत होकर उतर जावेगा और धूनी वालों का इच्छानुसार कार्य करेगा।

तथाच

अपमार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में पीस कर मस्तक पर उसका तिलक करने वाला तीनों लोक को अपने वश में कर लेता है।

वशीकरण चूर्ण

सहदेई लेकर छाया में सुखा लें। फिर चूर्ण को पान में खाने से सब वश में हो जाते हैं।

वशीकरण तिलक

गोरोचन और सहदेई को मिलाकर तिलक करने से जो देखता है वश में हो जाता है। तथा—

जो अपने ललाट और औदुम्बर की जड़ का तिलक लगाता है वह सबको प्रिय होता है। उस पर जिसकी दृष्टि पड़ती है वह उसके वशीभूत हो जाता है।

सर्वलोक वशीकरण

पान में औदुम्बर की जड़ जिसको खिलादे वह वश में हो जाता है।

वशीकरण गुटिका

सरसों तथा देवदार को इकट्ठा करके गोली बनाले फिर उसको मुंह में रख जिससे वार्तालाप करे वह सब वश में हो जायगा।

रक्त तिलक

कुंकुम, केशर, सोंठ, कूठ हरताल तथा मैनसिल को इकट्ठा करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलावे। फिर उसका तिलक लगाने सब लोग

वश में हो जाते हैं।

नारी वशीकरण चूर्ण

काला कमल, भौरा के दोनों पंख तगर मूल, सफेद कौवा गोड़ी इन सबका चूर्ण बना जिस नारी के सिर डाले वह शीघ्र दासी हो जायेगी।

स्त्री वशीकरण लेप

रात के अन्त में जो मनुष्य बायें हाथ से अपना वीर्य नारी के बायें चरण के तलवे में मलता है वह नारी उस पुरुष के वश में हो जाती है।

तथा अन्य लेप

सैंधा नमक, और कबूतर की बीट को पीस कर जो मनुष्य अपने लिंग पर लेप करके स्त्री से रमण करता है वह स्त्री दूसरे पुरुष को सुन्दर रूप-वाला मानती है तथा—

गोरोचन, कुमुद, पारा, केसर और चंदन इसको धतूरे के रस में रमण करता है तो उस स्त्री के हृदय में मधुर भाव को प्राप्त करता है। अर्थात्–प्यारा हो जाता है।

वशीकरण चूर्ण

ब्रह्मदण्डी, बच तथा कूटका चूर्ण बनाकर उसको

पान में रविवार के दिन जो जिसको खिलावे वह वस में हो जाता है ।

वशीकरण तिलक

वट वृक्ष को पानी में घिसकर उसमें भस्म मिला कर उसका तिलक लगाने से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं ।

पुतली सर्व वशीकरण मन्त्र

ओम ह्रीं क्लीं जंहिये अमुकी आकर्षय आकर्षय मम वश्यं कुरुकुरु मोह कुरू कुरू स्वाहा ।

एक पुतली बनाकर केसर कुंकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर शुभ घड़ी में पूजन करे । और अपने कार्य की प्राप्ति को फिर अर्ज करे और लीप पोत स्वच्छतासे रखे और फिर खैर (कत्थे की लकड़ी) की लकड़ी से तपावे और १०८ बार मन्त्र जप गूगल की गोली व लाल कनेर का फूल घृतमें सानकर अग्नि में डाले तो १०८ दिनमें काम सिद्ध होवे । इस पुतली से नर नारी प्रजा सब वश में होवे ।

राजा वशीकरण

'ओम नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपति वश्यं कुरूकुरू स्वाहा ।।

यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है और प्रयोग करने के पूर्व १०८ बार जप करके प्रयोग करना चाहिए। इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आया है, वहाँ प्रयोग करने के समय जिसके ऊपर प्रयोग करना है उसका नाम लेना चाहिए।

वशीकरण मन्त्र

ओम नमः भवाय नमः सुवणिक अमुकी (इस स्थान पर उस स्त्रीका नाम) में वश्य भवाय स्वाहा।

इस मन्त्र को दस हजार जाप करे फिर जिह्वा का मैल, दाँत का मैल, नाक का मैल कान और दाँत का मैल, लिंग का मैल इन सबको मद्य में मिलाकर जिस नारी को पान कराये वह वश में हो।

राजा वशीकरण अंजन

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन सुदर्शन की जड़ लाकर उसमें तुलसी की पत्ती और कपूर मिलाकर उसको पीसे। फिर वस्त्रके ऊपर लेपन अर्थात वस्त्र में लपेटकर उसकी बत्ती बनाले। फिर स्वच्छ होकर सावधानी से विष्णुकांता के बीज के तेल में रात्रि के समय उसे जलाकर काजल पार ले। इस काजल को नेत्रमें डालने से राजा वशमें होजाता है।

तथा तन्त्र

जिस मंगलवार के दिन अमावस्या हो उस दिन नित्यक्रिया करके स्वच्छता पूर्वक वन में चला जाय और वहाँ जाने पर उत्तर की ओर मुख करके खड़ा होकर अपामार्ग के पेड़ को देखे। फिर उसी स्थान में ब्राह्मण बुलाकर विधिपूर्वक उसकी पूजा करके उसको १६ माशे सोना दान कर दे और उसी ब्राह्मण से अपामार्ग के बीज को निकलवा कर ले ले। फिर उस के बीज को लेकर गृह को चला आवे और मार्ग में किसी से कुछ न बोले। फिर उन बीजों को साफ कर ले और हृदय में रमेश भगवान का ध्यान करके जैसे हो सके इस उपाय से उस बीज को राजा को खिला देना चाहिये। इसप्रकार का वसीकरण करने से राजा जन्म भर वसीकरण करने वाले के वशमें रहता है।

तथा अंजन

तालीस कूट तथा अगर मिलाकर लेप बनाले, उस लेप को रेशम के कपड़े पर आध लगाकर उसकी बत्ती बनाले फिर मनुष्य की खोपड़ी में कड़ुवा तेल (सरसों का तेल) डालकर उसमें उस बत्ती को लत करके उसका काजल पारे और उस

को नेत्र में देकर जिसको देखे वह वस में हो जाता है यह अँजन तीनों लोकों को वस में करने वाला है।

पुरुष वशीकरण मन्त्र

'ओम नमो महा यक्षिण्यै मम पति मे वश्य कुरुकुरु स्वाहा ॥

अन्य मन्त्रों के समान एक लाख जप करने से यह सिद्ध होता है और प्रयोग करने के पूर्व १०८ बार इसका जप करके तब प्रयोग करना चाहिये।

राजा का वशीकरण

कुंकुम, चन्दन, कपूर, और तुलसी का पात्र गौ के दूध में पीसकर तिलक करने से राजा वश में होगा

तथाच तिलक

हरताल, असगन्ध और मैनसील को बकरी के दूध में पीसकर तिलक करने से राजा वश में होगा।

प्रेत वशीकरण

जिस प्रकार सास्त्रों में भूतों का वर्णन आया है उसी प्रकार प्रेतों का भी आया है। किसी सास्त्रकार ने प्रेतलोक का भी वर्णन किया है। सावरि तन्त्र और यक्षणी साधन जाप पुस्तकों में इसका पूर्ण विवरण है।

भूत वसीकरण

जो मनुष्य भूतों द्वारा उपचार करते है वह 'स्याने' कहलाते हैं। भूत एक प्रकार का रोग है जिसका सविस्तार वर्णन नायुर्वेद ने किया है। वैधक सास्त्र के अनेक ग्रन्थ ऐसे पाये जाते हैं जिसमें भूत प्रतादि का वर्णन आया है तथा उनका इलाज भी यन्त्र मन्तर पाव जाते हैं। वह मन्तर ऐसे है कि जिनका वर्णन पृथक-पृथक ग्रन्थोंमें अलग-अलग लिखा है यहाँ वसीकरण करने का वर्णन सूक्षम रूपसे किया जायगा।

भुत वसीकरण मन्तर

ओम चन्द्रमौलिक शंकरी भुतनाथो गिरजापतं।
नीलकंठाय सर्प बिभुषित डमरू त्रिशूल धर नमो।

विधि

चन्द्रमा के उदयकाल में नदी तट पर जाकर स्नानादि से पवित्र हो होवे और बागम्बर बिछाकर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे उपरोक्त मन्तर का १०८ बार जाप करे इकतीस दिन में मन्तर सिद्दि को प्राप्त होगा।

अथवा

ओम नमो भगवते ओंकारेश्वराय: ओम कोरेश्वराय: कुंह कुंह इहूँ कुरनी कुरवती स्वाहाः ।

विधि

निर्जन वन में जाय बट पेड़ के नीचे कुशासन बिछा कर रात के समय जपे और एकाग्र चित्त से श्री शंकर महादेव का ध्यान धरे और प्रतिदिन १०० बार मंत्र का जाप करे । इक्कीस दिन पीछे मंतर सिद्धि को प्राप्त होगा ।

सर्व वसीकरण मंतर

ओम नमो आदेस गुरु को । राजा मोहन जाप मोहन मोह ब्राह्मण बनियां । हनुमतरूप में जगत मोह तो रामचंद्र भणि भणियां । गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंतर ईश्वरो वाच ।

विधि

इक्कीस दिन तक १०१ बार जपे तो सिद्ध होकर जिस गाँव में जावे तो वहां के चौराहे की धूलमें सात बार मंतर पढ़कर माथे पर लगावे । जो देखेगा वह वस में हो जायगा ।

सर्व नारी साधुयोग

कूठ, चंदन इसमें कपूर मिलाकर तिलक करे तो और नारी के गले में बाँह डालकर वस में करे तो नारी वश में होवे ।

अद्भुत वशीकरण

चिता की भस्म, बच, कूट, केसर और गोरोचन इन सबको सम भाग लेकर चूर्ण बना जिस नारी के सिर पर छोड़े तो अवश्य ही वस में हो जावेगी ।

राजा वशीकरण

कुंकुम, चंदन, गोरोचन इनमें भीमसेनी कपूर मिलाकर गौ के दूध में घोंटकर तिलक करने से राजा वश में होता है ।

तथाच

चम्पा के बांदे को यत्न से भरणी नक्षत्र अथवा पुष्य नक्षत्र में लाकर विधिपूर्वक हाथ पर बांधे तो उसके देखने से राजा और मनुष्य वश में हो जाते हैं । तथा हाथ में सुदर्शन की जड़ बांध ले तो राजा का प्यारा हो जाता है । परंतु इसके पहले—

मन्त्र

'ओम ह्रीं सः अमुकं मे वश मानय स्वाहा ।'

इस मन्त्र को १००० बार जैसे विधि पहले कही गई है। उसीप्रकार के आसन पर बैठकर उसी प्रकार की माला से वैसे ही दिन नक्षत्र में जप लेवे।

पति वशीकरण मन्त्र

ओम नमः कामाक्षी देव्य अमुकी में वशं कुरुकुरु स्वाहा

यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। प्रयोग करना हो तो प्रयोग के पहले १०८ जप कर लेना चाहिए। प्रयोग करने में अमुकी शब्द के स्थान में जिस नारी पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये।

पति वशीकरण मन्त्र

गोरोचन, योनि में का रक्त और केले का रस इकट्ठा करके इसका तिलक करने से पति वश में हो जाता है।

तथाच

सफेद सरसों और अनार का फूल, टहनी पत्ते जड़ को इकट्ठा कर योनि के ऊपर इसका लेप करने से यदि स्त्री दुभगा हो अर्थात कुरुप भी हो तो भी अपने पति को दासके समान अपने वशमें कर लेती है।

तथाच

जिस स्त्री को वश में करना हो उसका नाम कम्बल के पत्र पर गोरोचन से शनिवार को लिखे। फिर उसी पर तिलक करने से वह स्त्री वस में हो जाती है।

वशीकरण अंजन

मंगल के दिन मालती के फूल को यन्त्र में लपेट कर बत्ती बना ले। फिर मनुष्य की खोपड़ी में रेड़ी का तेल डालकर उस बत्ती को उसमें जलाये और काजल करे, इस प्रकार बनाये हुए काजल को अपने नेत्रों में देकर स्त्री पर जिसको वश करना हो दृष्टि-पात करने से बिना मन्त्र के स्त्री वश में हो जाती है मेरा कहना मिथ्या नहीं है।

तथा लेप

यव का चूर्ण, हल्दी, गोमूत्र, घृत तथा सरसों का तेल लेप बनाकर जो शरीर पर लेपन करे उसको देखते औरत उसके वस में हो जाती है।

तथा चूर्ण

उल्लू पक्षी का माँस छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बनाले। फिर जिसकी औरत के सिर डाल दे

वह वश में हो ।

जगत वशीकरण

इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि मनुष्य जिस स्थान पर जावे अथवा जिस मार्ग होकर निकल जावे उधर के समस्त औरत-मरद वशीभूत हो जावे अथवा जिस सभा में जाकर बैठ जावे उसमें बैठे हुए सब मनुष्य वस करने वाले के ही गुणगान करते रहें ।

मन्त्र

ओम नमो भगवते रुद्राय नमः सर्व जग वस्य कुरूकुरू फट स्वाहाः ।। (उड़ीस तन्त्र)

विधि

यह मन्त्र ४१ दिन में सिद्धि को प्राप्त होता है । इसकी क्रिया इस प्रकार की जाती है कि स्नानादि से निवृत होकर वट के नीचे अश्वनी नक्षत्र रविवार से से सिद्धासन द्वारा बैठकर जप करना शुरू करे और सवा लाख बार मन्त्र को श्रद्धा सहित विश्वास के साथ जपता रहे सिद्धि को प्राप्त होगा ।

अथवा

ओम भुवन भास्कराय जगद्वश्यं द्रव्या ।
भवान्ति घनश्चाय सुखं पश्यन्ति तेतं वश्यं स्वाहा ।।

विधि

चाक की मिट्टी अबाकी राख दोनों को मिलाकर पहले चौका लगावे फिर स्नानादि से निवृत होकर प्रातकाल सूर्योदय के उद्बासन द्वारा बैठे और विश्वास सहित सात दिन जाप करे। एक स्वांस में सभी मन्त्र सिद्धि को प्राप्त होगा।

वशीकरण इलायची मन्त्र

ओम नमो काला कलवा काली रात निशा की पुतली आंधी रात। काला कालवो धाड़ वाड़, सोती को जगाय लाव, बैठी को उठाय लाव, खड़ी को चलाय लाव वेगी घर लाव, मोहिनी जोहिनी चल, राजा की राउ अमुकी के मनमें चटपटी लगाव, जीया लें तोड़ जो कोई खाइ इलायची हमारो, कभी न छोड़े हमारा साथ घर को तजे बाहर तजे, घर के साईं को तजे, हमें भजे और कनों जाई छाती फाट तुरत मर जाय। सत गुरु आदेश गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ईश्वरो महादेव की वाचा, वाचा टरे तो कुम्भा नरक में पड़े।

विधि–२१ दिन में सिद्ध करके इलायची पर ११ बार पढ़ के मन्त्र दे तो अवश्य वश में हो।

तथा तिलक

बेल पत्र और मातु गल को बकरी के दूध में मिला कर तिलक करने से सर्व साधारण वशीभूत हो जाते हैं।

तथा भाँग का बीज और घी ग्वार की जड़ का तिलक माथे पर कर देने से सब लो बश में हो जाते हैं। तथा हड़ताल, असगन्ध तथा सिन्दूर को केले के रस में मिलाकर ललाट पर तिलक करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

तथा अपामार्ग का बीज बकरी के दूध में मिलाकर तिलक लगाने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

तथा पान और तुलसी के पत्र को कपिला गौ के दूध में मिलाकर ललाट पर तिलक लगाने से सब कोई बश में हो जाता है।

लौंग वशीकरण

ओम जल की योगनी पाताल का नाग जिसपे भेजू तिसे लाग। सोते सुख न बैठे सुख, फिर देखे मेरी आँख फूटे तो बाबा नारसिंह को जता छूटे।

विधि

चार लौंग पीस पत्ते में रख अगर की धूनी दे।

फिर औंगा तने रख पानी में गोता लगावे और सात बार उपरोक्त मन्त्र को पढ़कर फिर पानी से निकालकर मुँह से पत्ता निकालकर अगर व गूगल की धूनी देकर जिसे खिलावे सो आवे।

वशीकरण तिलक

सफेद आक की जड़ को छाया में सुखाकर कपिला के दूध में उसका तिलक करले। जो देखेगा वश में होगा।

वशीकरण लेप

सफ़ेद दूब को कपिला गौ के दूध में भिगाकर शरीर पर उसका लेप करने से सब कोई वश में हो जाता है अर्थात इस लेप को शरीर पर लगाता है उसको देखने वाले उसके वश में हो जाते हैं।

पति वशीकरण मन्त्र

ओम, ह्रीं ध्रीं क्रीं, थीं ठः ठः ॥

पड़वा के दिन परेवा पक्षी को मार लावे फिर मन्त्र पढ़ उसका माँस पान में डालकर खिलावे तो पति वस में रहे।

वशीकरण

उल्लू का मांस तथा बकरे का माँस दोनों जलमें

दिखा देवे तो वह रात दिन वश में रहेगा।

शत्रु वशीकरण

लाल चन्दनसे भोजपत्र पर दुश्मन का नाम लिखे या शहद में डुबा दे तो वैरी वश में हो जावे।

वशीकरण बुकनी

चिता की राख, कूट, बच, तगर कुंकुम को पीस कर स्त्री के सिर पर छोड़े जन्म भर दासी हो।

शत्रु वशीकरण विधि

घुग्घू की चोंच और पांव दोनों मिलाकर पीस ले और १०८ बार मन्त्र जपके वैरी के माथेपर बुरकी डाले तो वह वश में हो जाय और कुछ न करेगा।

सर्व कामना सिद्धि मन्त्र

घुग्घू की पीठ का हाड़ लेकर और घिसकर उस का तिलक लगावे तो सम्पूर्ण कामना पूरी हों। इसका मन्त्र ये है—ओम नमो मृहा पंखे शाखरी आच्छ अतु-लाव बल पराक्रमाय सर्व कामना वश्यं कुरुकुरु मन्त्रेश्वरी आठ ओम स्वाहा।

सोता मनुष्य चित की बात कहे

घुग्घू का कलेजा निकालकर गूगल की धूनी दे और मन्त्र पढ़कर उसको सिद्ध करले फिर यन्त्र में

रख दे तो फिर उससे जो कुछ बात करे जवाब दे।

बाल उपज नहीं

मरी जोंक सुखालो घोड़े की लीद में ४० दिन तक गाड़ दे बाद में जोंक को निकाल कर पीसले, जिस जगह लगावे बाल नहीं उपजे।

मन्त्र देह की रक्षा का

छोटी मोटी मथकार को वी बाँधे मरा घमासण बाँधे जादू वीर बांधे २ कुमरी स्यार बिच्छू बाँधे और साँप बाँधे लोह लाहका कोटे हसीलास की धाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि

जंगल या घरमें सोवे तो तीन बार पढ़कर जाँघों पर हाथ मारें जितना पृथ्वी पर प्रबन्ध करे उतनी में घेरा करे तो भय न हो पश्चिम चले पर देश को कुतुब जी के साथ चोर नाहर तीनों बंधाव जहाँ सोवे बैठ तीन बार मन्त्र की ताल देवे।

मार्ग चले थके नहीं

नौमी इतवार के दिन घुग्घू के चोंच तथा पर दोनों को भस्म करे और बेलपत्र के चूर्ण को उसमें मिलाकर पाँव पर लेपकर तथा १२ मन्त्र जपे। मन्त्र

यह है – ओम नमो महापंखे अमृत गुरु स्वाहा वक पन्छी रुधामारीसिह मंहिमा वरती तस ऊपर भगवत परे अच्छा भगवस सोसन ।

वशीकरण

कागा काको धन हरे, कोयल काको देय ।
मीठे वचन सुनाय कै, जग अपनो करि लेय ।।

परन्तु संसार बड़ा कठिन है । साधारण नुस्खे से काम नहीं चलता । इसलिये तन्त्र-मन्त्र द्वारा सर्व कार्यो की सिद्धि बतला दी जाती है मनुष्य तथा पशु-पक्षी भूत प्रेत सभी वश में किये जाते हैं ।

स्त्री वशीकरण

कांगनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर काले धतूरे का पंचांग इन सब औषधियों को बराबर लेकर गोली बनाकर छाया में सुखा डाले फिर उस गोली को पान में रख जिस औरत को खिला देवे वह जिये तब तक वश में रहेगी ।

लोक वशीकरण मन्त्र

बेल का पत्ता, बिजौरा और नमक लेकर उसमें बकरी का दूध डालकर घासे और तिलक लगावे तो लोक के प्राणी वश में होवे ।

श्रेष्ठ वशीकरण

घी ग्वार की जड़ लाकर भांग के बीज मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है

तथाच

रविवार के दिन हाथ पांव तथा नख का मैल पान में रखकर जिस स्त्री को दे वह वश में हो जाय।

एक विशेष प्रयोग

जिस स्त्री को वश में करना हो उसके बांए पैर के नीचे की मिट्टी को शनिवार को ले आवे, फिर उस मिट्टी की पुतली बनाकर उस स्त्री का बाल उसमें लगावे। फिर उस पुतली को नीले कपड़े में लपेट कर उसकी मांग में सिंदूर लगाकर उसमें अपना वीर्य डाले और उस औरत के द्वारे पर जमीन खोद करके उस पुतली को गाड़ दे तो उसको लांघने से वह औरत प्राण और धन से वशीभूत हो जायगी।

इस प्रयोग को प्रत्येक व्यक्ति को न देना चाहिए क्योंकि यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

तथा बुकनी (चूर्ण)

चिता की भस्म और ब्रह्मदण्डी का चूर्ण बनाकर जिस औरत के शरीर पर छिड़क दे वह

औरत उसके वश में हो जाय, यह प्रयोग मिथ्या नहीं है।

वशीकरण तिलक

तालमखाना और मेनसील को पान के रस में पीस कर तिलक लगावे। फिर मंगल के दिन जिस औरत को वश में करना हो उसका नाम लेकर तिलक करने से उस तिलक को देखते ही वह औरत जिसको वश में करना हो वह वश में हो जाय।

तथाच तिलक

रविवार के दिन काले धतुरे का फल, पत्त, शाखा, लता तथा जड़ को ले आवे। फिर उसमें समान भाग कपूर, केसर और गोरोचन मिलावे और इनको पीसकर तिलक बनावे। फिर उस तिलक को ललाट पर दे तो यदि साक्षात अरुधन्ती के समान भी औरत हो तो वश में हो जाय।

तथाच

काकजंग, तगर, कुंकुम केस्र और मेनसिल का चूर्ण बनाकर जिस औरत के सिर पर डाल देने से अद्भुत वशीकरण हो जाता है।

तथा चूर्ण

चिता की भस्म, बच, कूट, तगर और कुंकुम को समान मिलाकर चूर्ण बनावे। फिर उसको औरत के सिर पर डालने से औरत वश में हो जाती है।

वशीकरण तिलक

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केसर, चन्दन, काग़जंघा की जड़ इन सबको सम भाग लेकर बावली आदि जलासय से जल लाकर सबको कट पीस कर कुँवारी कन्या के हाथ से उसकी गोली बनवाले और छाया में सुखावे। फिर समय पर उस गोली को घिस कर चन्दन लगाकर जहाँ जावे और जो देखे वश में हो जावेगा। राजद्वार न्यायालय और युद्धादि में भी जाकर देखने वाला वसमें हो जाता है।

राजा कामदार का वशीकरण

बिस्मिल्लाह ताला कुल्हू अल्लाह यगाना बिस सख्त तुम को वाना हमारे ओच फलाने को करो दिवाना। विधि

४१ बिनौले लाए फिर एक-एक को इकतालीस बार मन्त्र के समय अर्धरात्रि के समय अग्नि में डाले। तीन दिन में मनोरथ पूरा होगा। प्रथम इक्कीस दिन

तक २१ बिनौलों पर इक्कीस २ बार पढ़ के जलाए तो सिद्ध होवे ।

राज वशीकरण मन्त्र

ओम नमो आदेस गुरु का । जल बांधू सहर बांधू अग्नि बांधू चार वन बांधू सिव पुत्र प्रचण्ड बांधू राजा ईकरसी आसन छोड़ मुझे बैसण देसी, असनो टीको चन्दन ललाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूँ संईयालते में बन्ध्या न गोरी पार्वती बन्ध्या था गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच ।

विधि

धूप दीप नैवेद्य रखके पार्वती का ध्यान करे । शनिवार से २१ दिन १२१ जाप करे । मन्त्र सिद्ध हो जायगा । पश्चात कुंकुम, चन्दन, गोरोचन मिला कर गौ के दूध में तिलक कर राजा के सम्मुख जाए तो देखते ही वश में हो ।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओम ताल तुम्बरी वह वह वरें भाल भाल आ ओ धु हें हें हे काल कामनी कोट करिया ओम ठः ठः

राजहंस का पंख और कोचनी के फूल प्रातःकाल गौ दूधमें खीर पकाकर मन्त्र पढ़कर अग्नि में आहुति

करे और अपने चित्तमें बस करने वाले का ध्यान करे तो तत्काल सिद्ध होती है।

राजा वशीकरण मन्त्र

ओम धुं धुं बीन धा धा सवजंता द्रवयि वहया जा कहयाता वह मातंगी भवान अमा अमा ओम

क्ष: क्ष: क्ष:

श्वेत रेसमी कपड़े पहन कर मोती की माला जप कर श्वेत दूर्वा और रूप कामनी के फूल अग्नि में आहुति करे तो राजा वश में होए।

आकर्षण प्रयोग

काले धतूरे के पत्तों का रस और गोरोचन इन दोधों को लाकर घोल डाले फिर कनेर की कलम से भोजपत्र पर पन्द्रह का यन्त्र लिख बुलाना होय उस का नाम लेकर खैर को अग्नि से उस भोजपत्र को तपावे। वह मनुष्य जरूर आएगा।

वशीकरण प्रयोग

पुष्य नक्षत्र रविवार को जब होय तब सहदेई को लाकर के छाया में सुखावे, फिर पान में जिस औरत को खिलाए वह जरूर वश में हो।

वैरी ज्वर करण मन्त्र

ओं ह्रीं उलका मुखो रक्तक्षो विद्युते जिह्वे अमुक को ज्वर लगाय आवश हव हन दह दह पच पच स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र को शनिवार के दिन १०८ बार जपे तो वैरी दुख पावे ।

आपस में लड़ाई कराने का मन्त्र

ओं महा भरवाय श्मशान अमुक अमुको (इस स्थान पर जिससे लड़ाई करानी हो उन दोनों का नाम ले) विद्वेषण कुरु वट ।

विधि

इस मन्त्र को १०८ बार जपे १३ दिन तक तो दोनों की प्रीति छूटे ।

ताना बिगाड़ना

लाय अश्विनी जामन कील ।
डारे घर कोली के शीस ॥
द्वादश अँगुल हाथ प्रमान ।
सूत नष्ट तत्कालहि जान ॥

मन्त्र

ओम नमो भगवते रुद्राय भूत बलाल बन्सनाय
शंख चक्रगदाधराय हन हन महेश चन्द्र
युताय हुं फट स्वाहा ॥

इस मन्त्र को एक लाख जपे तो सिद्धि प्राप्त होती है सिद्धि हो जाने पर सात बार लेप को अभिमन्त्रित करके लेप करे ।

तथाच

कुत्ता, बिलाव, न्यौला इनका पित्त समान भाग ले करके लेप करे तो पन्द्रह योजन जाकर कौआ का मांस और रसांजन मिलाकर एक में घिसे उसका लेप चरण तल में करके उसी दिन फिर लौट आवे ।

भूत बाधा नाशक लेप

खस, चन्दन, कांकनी, नागर तथा लाल चन्दन कुट इन औषधियों का तेल भूत बाधा को दूर करता है ।

तथा मन्त्र

ओम नमो भगवते उडामरेश्वराय कुहनो कुर्वती स्वाहा

इस मन्त्रासे सौ बार झाड़ें और ऊपर जो औषधि कहा है उसे अभिमन्त्रित करके तब लेप करे तो इसके करने से सुख प्राप्त होगा ।

दो दीपक की लौ आपस में लड़े

एक दीपक में भेड़िये की चरबी और दूसरे में बकरी की और रामबान रुई की बत्ती बनाके चिरागों में डाले फिर एक दक्षिण की ओर दूसरा उत्तर में जला दे (आमने सामने) तो दोनों दीपक की लौ आपस में लड़े और ठण्डा करे दूसरा रोशन हो जाय जो बुझाना चाहे तो दोनों एक ही साथ बुझ जायेंगे।

मालिन की डलिया उछला करे

भादों या कुआर के मंगल में या इतवार को मेंढ़क लावे और उसके मुंह में मिट्टी भर के गाड़ दे कि वर्षा उसके ऊपर पड़े और मुख में सात दाने उरद के भरदे पेड़ उत्पन्न होवे और फल लावे तब उस फल को निकाल ले अगर उसमें से सात दाने जिस मालिन की डलिया उछला करे।

कपड़ा आग में न जले

बरांण्डी में कपूर मिलाकर कपड़े को सात बारतर करे फिर कपड़े को जमीन में बिछाकर उपले रखकर आग जलावे तो कभी न जले।

लकड़ी लाने की विधि

शाम के वक्त शनिचर के दिन पीले चावल से

नेवता दे आवे और रविवार को जाकर कहै कि मैं तेरी लकड़ी की खड़ाऊं बनाऊंगा और फिर लकड़ी लावे ।

पेट में नाज बोलने का यन्त्र

मंगल या शनिवार के दिन दो चकोर नर को हांड़ी में बन्द करके उत्तर की तरफ खेत में दबादे फिर जो कोई उस खेत में नाज को जबरदस्ती या चोरी से काटेगा तो उसके पेट में दर्द करे और बोले

दो बरतन आपस में लड़े

पुष्प नक्षत्र रविवार या मंगल के दिन दो दांत काले कुत्ते के और दो काली बिल्ली के लावे और चारों दांतों के ऊपर सिन्दूर लगा कर प्याले में रख दे और ढकनी से ढांकदे फिर दो दांत भेड़ के और दो बकरे के लावे और सिंदूर लगाकर बकरे के दांतों को एक प्याले में बन्द करके उत्तर और दक्षिण की तरफ एक हाथ के अन्तर से रखदे कि एक प्याला कुत्ते और बिल्ला वाली बीच में रहे फिर हुक्म की धूनी दे तो दोनों बरतन आपस में लड़े ।

ज्वर निवारण माहेस्वर धूप

लोबान, घी, हींग, देवदास, इन्द्रायणी, गोदन्ती

सुगन्धवाल, सरसों, केश, कुटकी, नीम के पत्ते दोनों खटाई बच, पथ्य, सूखा बिनौला बकरी के रोम, मोर शिखा यह सब लेकर इकट्ठा करे। फिर बैल के मूत्र में पीसकर मिट्टी के कोरे बर्तन में रख छोड़ो। यह माहेश्वर धूप है। उन्मत्त रोगी को यह धुप देनी चाहिये तो ग्रह, राक्षस, पिशाच आदि नागभूत पूतना शाकिनी, एकाहिक, दुयाहि और त्रयाहिक, चातुर्थिक ज्वर तथा जो और भी विघ्नकारी रोग हैं सब क्षण मात्र से दूर हो जाते हैं।

तथा

गुगल, लहसन, घी साँपकी केंचुरी बानर के रोम और मुर्गे की विष्ठा तथा कबूतर की विष्टा इन सब को धूप करे। ग्रह पिशाच, भूत, पूतना शाकिनी ज्वर आदि रोग पर स्पर्श करने से नाश हो जाता है।

उन्मत्त करने का प्रयोग

धतूरे का बीज, लोहकिटका चूर्ण और गंगोटा विष्टा तथा कंजी बीज इन सबको बराबर भाग में लेकर इनका चूर्ण बनाकर भक्षण करने से मनुष्य उसी समय उन्मत्त हो जाता है। खान-पान में देवे तो भी उन्मत्त हो जाता है।

गुरु की शिक्षा

गुरु जब कृपालु होते हैं तो एक पल में निहाल करते हैं, इसलिये महिमा लिखने में नहीं आती, देखो जहाँ नग्न करना लिखा है वहाँ धोती की लांग खुलवा लेते हैं जिस जगह मनुष्य की खोपड़ी से काजल पारा जाता है उस जगह नारियल की आधी खोपड़ी काट के काम में लेते हैं जहाँ चौराहा लिखा है वह घर में वह घर में चौरस लिपवा दो लकीर चावल के आगे का एक पूरब-पच्छिम दूसरा उत्तर-दक्षिण खींचे। चौक में आसन बिछाके मरघट की जगह वहाँ भस्म बिछवा घर में जप कराते हैं तथा कवचों से अपनी रक्षा करले कि कार्य सिद्ध हो जावे।

मार्ग चले थके नहीं

काले तीतर को पकड़ के तीन दिन भूखा रखे चौथे दिन उसकी चोंच खोल के उसमें पारा डाल दे और चावलों को गंधी के दूध में भिगो के उसको खिलावे जब वह तीतर बींट करे तो उसमें से पारे की गोली निकाले उसको गुटका जाने उस गुटके को मुख में रख के मार्ग चले तो थके नहीं।

पूर्व जन्म दीखे

कंकोल के बीज का तेल निकाल उसमें एक रंग घो तेल के दीपक में जलावे काजल पारे जो कोई अपनी आँखोंमें वह काजल आँजे तो पूर्व जन्म दीखे।

देवी देवता दीखे

कंकोल के तेलमें नागर बेल फल का चूर्ण मिला कर आँजे तो मनुष्य दिखाई दे।

अनेक प्रकार के चित्र दीखें

इतवार को विरमिटी की जड़ लावे तथा उनकी बत्ती बनावे तथा काली गाय के घी में जलाए तो अनेक प्रकार के चित्र दीखे।

गड़ा धन दिखाई दे

लाल पूंछकी बामनी का रुधिर और मैनफल इन दोनों को पीसकर अँजन करे गड़ा धन दिखाई दे।

निधि दर्शक मन्त्र

जिस स्थान में निधि अर्थात धन हो वहां शिरीष और कनेर के पेड़का पचांग अर्थात शाखा, मूल, पत्र पुष्प तथा बीज, धतूरे का बीज, विष सफेद घघची, उल्लू पक्षी की विष्टा गन्धक तथा मैनशिल को समान भाग एकत्रित करके कड़ुए तेल में अग्नि पर रखकर

परिपक्व करले फिर इसकी धूप दे और निधि दर्शन के मन्त्र का जाप करे तो निधि पर के राक्षस, भूत वैताल, देवता दैत्य तथा नाग इस प्रकार से उसको छोड़कर भाग जाते हैं। जब ये बाधायें दूर हो जायं तब उस धन को निकाल कर मनुष्य सुख भोग सकता है। मन्त्र यह है—

ओ३म् नमो विघ्न विनाशाय निधि दर्शन
कुरुकुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जप करने से सिद्ध होता है। प्रयोग करने के पूर्व एक सौ आठ बार जप करके प्रयोग करने से सिद्ध होता है।

तिजारी निवारण मन्त्र

ओं नमो महा उच्छिराय योगिनी प्रकीर्ण घण्टा खांदति चर्वती ग्रासति भक्षति २ ओं ठः ठः ठः।।

ओंगा का फूल रविवार या मंगलवार के दिन लाकर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके दाहिने भुजा पर बांधे तो तिजारी दूर हो।

सर्वज्वर निवारण मन्त्र

ओं भैरव भूतनाथ विकराल कार्य अग्निकाय सर्व ज्वर वध.वं मोचय अस्त्वेति हूं।

हूक मारने का मन्त्र

ओं सुमेरु पर्वत पर सोना चमारी सोने की रांपी सोना की सुतारी हूक घूक बाह बिवारी घरणी बाखि काटि कूटि समुद्र खारा बहाओ सोना चमारी की दुहाई फुरो मन्त्र ईस्वरो वाच। इक्कीस बार पढ़े शरीर में हूक न रहे।

दूसरा मन्त्र

ओ नमो सार की छुरी धार का बान हुक नाम रे मुरूखदा जवान की आव शब्द साच पिड काचा फुरो वशई त्रम्मरो वाचा।

विधि

एक पैनी छुरी लेकर इस मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और पृथ्वी पर छुरी से लकीर खींचता जाय तो हूक बन्द होवेगी।

पारे का पात्र बनाने की विधि

पारा आधा सेर, नीला थोथा आधा सेर पीसकर कढ़ाई में रक्खे और उस पर नीला थोथा रख दे और एक पीतल का कटोरा या मिट्टी का बर्तन औंधा रखे और एक दस सेर का पत्थर कटोरे पर रख दे और अब कढ़ाई में घिरे तो पानी खौलता रहे और एक

पहर में जल जाये उस समय नीचे उतार पारे को पानी से निकाल कपड़े में छान ले और उसको कच्ची मिट्टी में मिलादे उसके भीतर तुलसी रस बनाकर भर कर तीन दिन पीछे उस बर्तन में पानी छोड़ दे दो घड़ी में उसके ऊपर की मिट्टी गल जायगी और पारा निकल आएगा जो मनुष्य उस पात्र में दूध भर कर पियेगा उसके पेट के सब रोग जाते रहेंगे और आगे कोई बीमारी न होगी।

तथा

आधा सेर या पाव सेर मोम के सांचे में आग में दबादे जब रांगा जल जाय और मोम की जगह भर जाय उस समय आग से उतार कर ठन्डा करे और नीचे को अलग करले फिर दूध पीए कोई रोग उसके पास न आए।

भूख न लगे

गिरगिट की आँत और करंजल का बीज इकटठा करके पीसकर उसकी गोली बनाले। फिर उस गोली को त्रिलोह में रखकर मुँह में रखने से क्षुधा-पियास पीड़ा नहीं देती है।

तथाच

बकरी के दूध में कमल का बीज, चावल तथा घृत मिलाकर खीर बनावे। इस खीर को बारह दिन तक भोजन करने से क्षुधा पीड़ित नहीं करती।

एक मास तक भूख न लगे

अपामार्ग के बीज को दूध और घी में परिपक्व करे। फिर भैंस के दूध में उसकी खीर बनाकर भोजन करने से एक मास तक क्षुधा नहीं लगती।

अधिक भोजन करे

दुपहरिया के पेड़ पुष्प तथा उसके पत्तों को पीस कर घी के सहित जो कोई उसको खाए वह भीमसेन के समान भोजन करे।

तथाच

शनिवार की संध्या समय में भोलाभा के पेड़ क आहार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रविवार को प्रात, काल में उसका पत्ता ले आना चाहिए। फिर भोजन करने के समय उस पत्ते को अपने चरण के नीचे रख कर भोजन करे तो बहुत सा भोजन किया जा सकता है।

तथाच

आहार के मन्त्र से भिलाभा के पेड़ के पत्ते को

अभिमन्त्रित करके जो दाहिने हाथ में धिता है, वह अधिक भोजन करने वाला हो जाता है। मैं सत्य कहता हूं कि इस आहार के प्रयोग करने से भीमसेन के समान भोजन किया जा सकता है। यह प्रयोग सबको न बतावे और यत्न पूर्वक गुप्त रखे।

शरीर रक्षा मन्त्र

ओम नमो आदेश गुरु को बर्ज वजी बजे किवाड़ बजी में बाधा बसो द्वारको घाले उलट वेद वाही को खात पहिली चौक गणपति दूजा चौक हनुमन्त जी तीजी चौक भैरों की चौथी राम रक्षा करने को श्री नृसिंह देव जी आये शब्द साँचा पिंड साँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

पेट की पीड़ा जाए

ओम नमो आदेश गुरु का श्यामा पर्वत श्याम गुरु पर्वत में तीन सूबा कौन कौन खाई हुवा जहर सूबा पीड़ा भोज भोज बेजहर आ गया जती हनुमन्त मारेगा भसमन्त फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

अग्नि जलने की विधि

मेंढ़क की चरबी हाथ मले और सुखा ले फिर जब अग्नि हाथ पर धरे तो जले नहीं।

तथा

फिटकरी, अफीम, नोन, सांवर कतरी और मुर्गी के अण्डे के छिलके और पारा लेके हाथ में मसले तो आग न जले।

गणेश मन्त्र

ओं अन्तरिक्षाय स्वाहा—इस मन्त्र से गणेशजी का पूजन करे और ओ ह्रीं पूर्व वया। ओं ह्री फट स्वाहा।

इस मन्त्र से लाख चन्दन और लाल कनेल का पुष्प, घृत तथा शहद मिलाकर हवन करे तो देवता मनोवांछित फल देते हैं।

भगवती मन्त्र

ओम ह्रीं श्री मानस सिद्धि करी ह्रों नमः ।।.

इस मन्त्रका जप करते हुए एक महीना तक प्रति दिन एक लाख कनेल का पुष्प चढ़ाने से वर दायिनी भगवती आठ गुणों में से एक गुण देती है।

वाक्य सिद्धि तन्त्र

कृतिका नक्षत्र में थूहर के पेड़ का बांदा लाकर जो अपने हाथमें बांधे उसे वाक्य सिद्धि प्राप्त हो जाय यह अत्यन्त विस्मय प्रद प्रयोग है।

इच्छा पूर्ण मन्त्र

इसी प्रकार—

ओम अन्तरिक्षाय स्वाहा—इस मन्त्र से स्वाती नक्षत्र में बेर का सन्दाक लेकर उसको हाथ में बांधे तो इसके प्रभाव से जिस समय जो इच्छा करे वह क्षण भर में पूर्ण हो जाती है ।

बिघ्न नाशक चूर्ण

गन्धक, हरताल और विष को पीसकर चूर्ण के समान बनाले। और उस चूर्ण को गौ के मूत्र में मिला कर उसको सुखा लो। इसका सेवन करके से सब तरह के विघ्न दूर होते हैं ।

पानी का दूध

मलमल लाय महीन अति लेवे दूध भिजोय ।
छाया सूखी ताहि कर फेर भिजोवे धोय ।।
सात बार ऐसा करे करके राखे पास ।
भरे घड़ा में गेरिये होय दूध जल जास ।।

आग का बुझाना

बैत की जड़ और घोड़े का सुम बराबर लेकर पीस ले और चूल्हे में डाले तो आग जले नहीं और धुंआ उठे ।

छप्पर, घर आदि का बुझाना

एक लोटा अच्छा जल लेकर और अग्नि की तरफ खड़ा होके अनेक तरह की प्रार्थना करके यह कहता जाय कि अग्नि देव शीतल हो और जब श्वाँस भीतर को जाय तब पीता जाय तो अग्नि शान्ति होय यानी बुझ जाय ।

अग्नि में कोई वस्तु भस्म न होय

शनिवार या रविवार को जब अमावस हो तब नव तुलसी की जड़ को गधे के मूत्र में बुझावे फिर जिस चूल्हे या भट्टी में गेरे तो कुछ चीज भी गरम न होवे ।

अग्नि जलने की विधि

मेंढक की चरबी अंजीर की लकड़ी में लगाकर चूल्हे या भट्टी में गाढ दे तो जब तक वह लकडी न निकले तब तक न जले ।

बालक का रोना बन्द होने का मन्त्र

ओम बिदुद्रव हहनाग्र स्फ्रे स्फे स्फे क्रां क्रीं
हीं ओम ॥

सूर्योदय के पहिले पवित्र स्थान की कोरी सींके ११ ले आवे और इतवार मंगल को इस मन्त्र को

प्रेत या चुड़ैल का मन्त्र

ओम ह्रों क्लीं कंकालकर्णिनी कूटम्बरी आडम्बरी
हंकार वंकार धः धः

नीम की पत्ती की धूनी देकर इतवार मंगलवार को इस मन्त्र से झारे तो बाधा शान्त हो।

नेत्र पीड़ा निवारण मन्त्र

ओ अँगाली बंगाली अताल पताल गर्द मर्द।
आधर जाधर फट् फट् उत्कट ओम हूं ठः ठः ।।

रविवार या मंगलवार को कुशा से २१ बार पढ़ कर झाड़ देने से सवप्रकार की नेत्र पीड़ा दूर होती है

पेट का शूल जावे

स्यार की नाभि को कतर उसमें गुड़ मिलावे चार गोली बनावे और एक गरम पानी के साथ रोगी को तीन-२ घड़ी में देवे तो आराम हो जाय।

जंगाल बनाने की विधि

सेर भर तांबे का चूरा और दो सेर नौसादर को पात्र में रखकर नीबू का रस डाल दे। ४० दिन तक रख छोड़े फिर छाया में सुखाले अच्छा जंगाल बने।

बाढ़ के कीड़ा निवारण मन्त्र

ओम नमो आदेश गुरु को नौलाख कामरू एक

बार जहाँ बैठे गोला वाला गंगा जमुना सरस्वती जहाँ बैठे गोरख जती गौतम ऋषि सिखर पर्वत आई कामधेनु ३६ रोग टले आधी राधी वाय गौरो माय हिरण दिया सितात पास पठिया मेरी रक्षा करे श्रीराम चन्द हनुमन्त वरवीर सब रोग दोष पराई बाव गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि

अच्छा पानी २१ बार मन्त्र गांव के निकास पर बैठ दाढ़ काढता जाय पानी का छींटा देय तो अच्छा होय ।

दूसरा दाड के कीडे का यन्त्र

सवाए में शशि में पीनी गीवा में कीड़ा वीढ़ा में कीड़ा मरे पीरा टरे शब्द सांचा पिंड काचा पुरा मन्त्र ईश्वरी वाचा ।

दो कोल की ढोलक कुएं में डारे दूसरी सीवन फाड़े तो कीड़ा मरे पीड़ा जाय ।

अन्न पचाने का मन्त्र

अगस्त कुम्भकर्णं सम्ंच वाग्वनलः ।
आहारं पाचनार्थाय स्मरद्भीमं च पंचकम ॥

भोजनोपरान्त इस मन्त्र से पेट पर हाथ फेरे तो अन्न पचे ।

वज हाथ, वज्र हाथ, भस्म करे सब पेट का भात दुहाई हजरत शाह कुल्ल मालम पंडवा की ।

बाँए हाथ पर ११ बार मन्त्र जपकर पेट पर फेरे तो जो कुछ खाया हो पच जावे ।

सफर में आराम मिले

गच्छ गौतम शीघ्रत्वं ग्रमेषुच आसनं वसनं शया
ताम्बूल यज कल्पयेत ।

सफर में जब ग्राम के समीप पहुंचे तब सात बार यह मन्त्र पढ़ देवे और साथियों को भी पढ़ा देवे फिर एक दूसरे को अपना बिस्तराविक देकर कहे कि गौतम ऋषि को न्यौता है फिर दूब को पराग में रख कर ग्राम में उतरे तो सुख पावे ।

चोरी काढ़ने का मन्त्र

उद्ध युद्ध जल जलाल पाकर चोरी घर पछाड़ में जबकुदुवाल्या वभुदा या कहार या कहार ।

इस मन्त्र को नदी के किनारे व कूप पर रात के समय १२१ बार नित्य पढ़े । सोलहवें दिन रात में

सारा भेद मालूम हो जायगा जिसने चुराया हो जहां रखा हो सब कुछ स्वप्न के द्वारा पता लग जायगा ।

तथा

ओम नारसिंह वीर रकपड़े ओम नारसिंह वीर चावल चुपड़े सरसों के फक फक करे, शाह को छोड़े चोर को पाकड़े आदेश गुरु को ।

चारों आरी का रुपया लाकर उसे दूध से धो डालो और उसे लोहवान की धूनी देवे । सवा पाव चावल मंगवाये उसे धोकर गौमूत्र में भिगो दे । फिर सुखाकर शनिवार की प्रातःकाल धरती लीप सफेद कपड़ा बिछवा कर उस पर चावल रखकर धूप दे (लोवान और गूगल की) फिर सात बार मन्त्र पढ़ कर (चावलों पर) रुपये बराबर चावल सबको चबवावे । चोर के मुँह में गोली बजे ।

मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र

लश्कर फहराऊ हरदानी लंगर शुद्धा जहाँ ।

सर्द होय पीली माटी में मन्त्र लिख तीन चार फिर माटी के बराबर गुड़ लडकों को बांटदे तो पीड़ा जाय ।

अँधेरी रात में दीखे

रविवार को नदी के किनारे जाए और मेंढ़क के जोड़े जुफती खाता हुआ लाए और छाया में सुखा ले फिर मोग में डाल कर भुन ले और पीस कर सुरमा बनाले, जो मनुष्य अँधेरी रात में लगाए तो चाँदनी की तरह दिखाई दे ।

जल में आग प्रगट हो

नौनियाँ गन्धक और नौसादर दोनों की पोटली बाँध जल में डाल कर मसले तो अग्नि प्रगट हो ।

कंठ माला का मन्त्र

ओं कन्ठ माला मृदुमुण्डमाला सिर पर घड़ो बज तो ताली गोरखनाथ जंगल से आया बढ़ती बेल तुरन्त की घटाला घट देख गई रोम पचे फूटे पीड़ा करे तो गोरखनाथ की दुहाई ।

पीलिया का मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का रामचन्द्र सर बांधा काला पीला थोथा पीला चारों झड़ रामचन्द्रजी नाम मेरा भक्ति गुरु की शक्ति पूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि

सुई से कटोरी भर के ६ दिन तक झाड़ा देवे ।

दाँत का मन्त्र

ओम बन्ता तुम काग कुलंता हम तुम्हें सजाय वा हम एक सरल मता वही गुरु हमारी तुम्हारी कौन रीति हम कसम खावें बतलाऊं मृत्यु के समय तुम संग ही जाऊँ ।

विधि

इस मन्त्र को सात बार पानी में पढ़कर पिलादे पेट की पीड़ा दूर हो जाय ।

आँख न दुखे

ओं नमो झलमल जाहर भरी तलाई, जहाँ बैठा हनुमन्ता आई । फूटे न पाके न करे पीड़ा यती हनुमन्त राखे पीड़ा ।

विभूति लेकर यह मन्त्र पढ़ कर लगादे ।

तथाच

ओ नमो श्रीराम की धनी लक्ष्मण का बाण आँख दर्द करे लक्ष्मण कमर की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति पूरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । सत्य नाम आदेश गुरु का दिवाली को १४४ बार जप कर सिद्ध करले फिर जिस किसी को इस मन्त्र से तीन दिन झाड़े वह सुखी हो ।

झड़ता हुआ गर्भ रुके

ओं ह्रां ह्रीं चल चले दुःचल हः ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र से २१ गाँठ लगाकर उस तागे को कमर से बांधने से गर्भ नहीं गिरता ।

कंठमाला का मन्त्र

ओ३म कण्ठबेल द्रु द्रु मद्रु मावली, शिर पर जड़ी गज की ताली गोरखराय जागता आया, बढ़ती बेल को तोड़ता आया । घटाया तो घट गई बेल। बढ़े ना रोग पाके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई ।

इससे भी सिद्ध कर विभूति से अच्छा करे। विभूति से छेक दे ।

वायुदोष नाशक मन्त्र

ओं करवर बांई भरी तलाई, जहां बैठ हनुमत आई पाके व फूटे, चले ना चाल, रक्षा करो गुरु गोरखनाथ नीम की डाली से झाड़ देवे। मंत्र के पहिले सिद्ध कर रक्खे ।

आँख का फूला काढने कामन्त्र

उतर काल काछ सुन योगी का बाल गोरख योगी की दो बेटी एक माथे एक चूल्हा एक काटे फूला

दुलाई सोना चमारी को शब्द साचा पिंड काँचा फुर ईश्वरो वाचा ।

विधि

लोहे की कील इक्कीस बार पृथ्वी में इस मन्त्र से ठोके तो फुला कटे ।

आधा शीशी निवारण मन्त्र

वन में जाय बाँदरो जो आधा फल खाय खड़े मोहम्मद फूँक दे आधा शीशी जाय ।

विधि

शुक्ल पक्ष में जुमेरात को २०१ बार मन्त्र पढ़ कर सिद्ध कर ले फिर रोगी के सिर पर तीन बार मन्त्र पढ़ के झाड़ दे ।

मृगी का मन्त्र

हलाहल सरथत मडिवा पुडिवा श्रीराम फूंके मृगी वायु सुखी ओं ठः ठः स्वाहा । यह मन्त्र लिखके कण्ठ में बाँधे जब मृगी आवे ।

संपूर्ण शिरोव्यथा मन्त्र

माला कण्डी के बेर २१ तब फूंके शिरो व्यथा निसु नसिर रोई वब घर मेघ गरजिह विसुनवाक हलु

धर फुफु निबेरी फुनि डमरू बाजे बिसु नहीं कलह बिन पुष्ट साँच भई ।

उठी आँख झरने का मन्त्र

ओ बने बिआई बानरी जहाँ जहाँ हनुमन्त आँख पीण कषा वरी गिहिया थने लरइ चारिउ जाय भस्मन्त गुरु की शक्ति मेरी भक्ति पुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि

आँखि पर हाथ फेरे सात बार मन्त्र पढ़कर फूँके तो व्यथा और पीड़ा न रहे ।

दाँत दर्द का उपाय

मन्त्र

हे दन्ता । तुम क्यों हन्ता । हमें तुम्हें है दोष । हम तो अकसर तुम बतीस । हमरी तुमरी कौन सी रीति । हम कमावें तुम बैठे खाओ । मृत्यु की बिरिया संग हो जाओ ।

जब मुँह धोवे तब जल लेकर सात बार इस मंत्र से कुल्ला करे तो पीड़ा जाती रहे हिलते दांत जमे ।

* समाप्त *

मुद्रक—भारती फाइन आर्ट प्रिंटर्स, मथुरा